मीनार-ए-इस्लाम

मेरी बात :-

जब मैं मीनार-ए-इस्लाम के बारे में लिखना चाहता था तो मेरे दिमाग में बहुत सी बातें पेश आई क्युकी सहाबाओ के बारें में मुख्तलिफ फिरकों के अपने-अपने खयालात हैं और क्युकी मेरा मकसद सबको साथ लेकर चलना है। इस लिए मैंने बहुत सोच और समझ कर उन्ही बातो को अपनी इस किताब में लिखा है। जो की तकरीबन हर फिरके के लोग एक राय रखतें हैं और मेरा मकसद भी भाई चारा बनाये रखना है हमारी हर किताब का मतलब और मकसद आपस में मोहब्बत और एतेहाद पैदा करना है क्युकी हमारे मज़हब-ए-इस्लाम में **ना-इत्तेफाकियाँ** कुछ ज्यादा ही हैं और क्यों ना हो हमारा मज़हब-ए-इस्लाम एक समंदर की मानिंद है कोई नदी या छोटी नेहर नहीं जिस पर काबू रखा जा सके इस लिए जो सच्चाईयां **नबी-ए-करीम (स.अ)** के पर्दा-ए-गैब में जाने के बाद पैदा हुईं और तमाम सहाबाओ नें अपने-अपने तरीके से **नबी-ए-करीम (स.अ)** की सुन्नतों पर चलते हुए अपनी ज़िन्दगी गुज़री उसमें कुछ फिरकों को एतेराज़ भी हुआ और कुछ फिरकों नें उसको सरहाया भी हम यहाँ पर किसी फिरके को बुरा नहीं कहना चाहता वो उनकी सोच हो सकती है मेरी नहीं। इस लिए हमने तमाम दोस्तों की मदद से खुसूसन कौमें जिन्नात और उनके तमाम बुजुर्गों की मदद से सच्चाइयों को रखा है और उम्मीद करते हैं हमारी इस किताब को पढने वाले नौजवान और बुज़ुर्गों को सहाबाओ की ज़िन्दगी जिनके बारे में **नबी-ए-करीम (स.अ)** ने खुद फ़रमाया की हमारे सहाबा सितारों की मानिंद हैं। मैं उम्मीद करता हूँ तमाम बडे सहाबाओ की ज़िन्दगी को पढकर अपने इल्म को ज़रूर बढ़ाएंगे और वह तमाम वाकियात जो अबतक मंज़र-ए-आम पर नहीं आए हैं आज उन् तमाम बातों से पर्दा हट जाएगा। ऐसा हमारा जाहिल दिमाग कहता है मैं यह किताब अपनी वाल्दा मरहूम (शाहजहाँ बेगम) को और इस्से मिलने वाली तमाम नेकियाँ उनको देना चाहता हूँ ख़ुदा इसे क़ुबूल फरमाए (आमीन, सुम्मा आमीन)।

शुक्रिया

नुसरत आलम शेख (जाफ़र)

रसूल-ए-पाक (स.अ) की वफात के बाद सब से अहम मसला यह हुआ के अब आपके बाद कौन खलीफा बनेगा। इधर ग़म का माहौल फ़िज़ाओ में मायूसी, आसमान खामोश, हवा खुश्क, और ज़मीन जैसे रो रही हो। इस अजीबो गरीब माहौल में एक अफरा तफरी मची हुई है। और इस दरमियान मुहाजिरों और अंसारो में यह बहस के रसूल का नायाब और खलीफा उन्ही में से कोई बने। मुहाजिर यह चाहते थे के खिलाफत उनके ही हाथ में आए. और अंसार यह चाहते थे के रसूल का अंसारों ने बहुत साथ दिया है और सबसे ज्यादा रसूल के चाहने वालो में से है। उस वक्त अंसारी कबीले में दो बड़े सरदार था। एक साद-बिन-उबैदा और दूसरे सरदार नसीब-बिन-मनाज़िर, साद-बिन-उबैदा के कबीले का नाम खीजरिज था और नसीब-बिन-मनाज़िर के कबीले का नाम ऊस था। मदीने में एक जगह जिस का नाम सफिफा बनी सईदा था। यहाँ पर दोनों कबीलों के बडे लोग जमा हुए ताके खलीफा का इंतेखाब किया जा सके। तो दोनों तरफ से यह तय हुआ। मुहाजिरों में अव्वलीन में से कोई एक को खलीफा बनाया जाए जिनके नाम इस तरहा थे।

१) अबू-उमय्या

२) अली

३) उस्मान

४) सलमान फारसी

लेकिन हबीब-बिन-मनाज़िर जो के खीजरिज के सहाबी थे। उन्होने कहा के मैं साद-बिन-उबैदा की हिमायत करता हूँ। लेकिन बशीर-बिन-साद यह भी खीजरिज कबीले के थे। उन्हों ने कहा के अबूबकर और साद बिन उबैदा में से किसी एक को बनाया जाए। लेकिन हालात कुछ इस तरहा बदले के साद-बिन-उबैदा को उनके ही लोगों ने क़त्ल कर डाला। अब सब की एक राय यह बनी के हज़रत अबुबकर रज़िअल्लाह-ताला-अन्हा को खलीफा बनाया जाए। इस तरहा रसूल के बाद खिलाफत हज़रत अबुबकर रज़िअल्लाह-ताला-अन्हा के हाथों में सौंपी गई आप रसूल-ए-पाक से सवा-दो साल बड़े थे कद तकरीबन ७ फिट लंबा, रंग गोरा और सर पर बाल ना

थे। आप का इस्लाम लाने से पहले नाम **अब्दुल काबा** था। इस्लाम लाने के बाद **अब्दुल्लाह** नाम हुआ और आखिर में **अबुबकर-बिन-कहाफ** के नाम से आप को पुकारा जाने लगा, आप के **बाप का नाम उस्मान बिन कहाफ** और आप की **माँ का** नाम **सलमा** था। लोग आप को आँखों का डॉक्टर भी कहते थे। आपकी (४) बीवियाँ थी।

१) *कतियाला बिन्ते अब्दुल्लाह* :- इनसे उसामा और अब्दुल्लाह हुए. अब्दुल्लाह का इन्तेकाल १ शवाल ११ हिजरी को हुआ।

२) *उम्मे रूमान बिन्ते हारिस* :- आप से हज़रत आएशा सिद्दीका और अब्दुल रहमान पैदा हुए।

३) *आसमा बिन्ते उमईस* :- इन से एक औलाद हुई इन का नाम मुहम्मद आबिदे कुरेश यह वही मोहम्मद है जिन्हें हज़रत अली ने ३७ हिजरी में मिस्र का गवर्नर बनाया गया था। लेकिन जंगे जमल और जंगे सिफ्फिन उन दोनों जंगो में आप हज़रत अली के साथ रहे और दुश्मनों का डट कर मुकाबला किया लेकिन जब हज़रत माविया से आप की जंग हुई तो आप को हार का सामना करना पड़ा और हज़रत माविया ने आप को बड़ी बेदरदी से गधे की खाल में भरकर के जलवा दिया।

४) *जनाब-ए-हबीबा बिन्ते खारिजा बिन ज़ैद अंसारी* :- आप से एक लड़की हुई जिसका नाम कुलसुम था। कुलसुम का निकाह तल्हा बिन्ते अब्दुल्लाह से हुआ।

हज़रत अबुबकर का इन्तेकाल २२ जमादुस्तानी सन १३ हिजरी को हुआ। आप हज़रत के दौर में ४ लोगों ने पैगम्बरी का एलान किया था। इन ४ के नाम इस तरहा है।

१) अस्वाद अनासी

२) मुस्लिमा कज्जाब

३) तल्हा बिन ख्वालैद

४) सज्जा बिन्ते हारिस

हज़रत अबुबकर के दौर में मुश्किलों का अम्बार था। आप को तमाम फैसले दबाओ में करने पड़े। खलफिशार की कोई सीमा न थी आप को किसी न किसी तरीके से जंग करना पड़ती थी। इस लिए आप उलझ कर रह गए थे। और सब से बड़ी बात यह भी थी की जब आपकी खिलाफत का ऐलान हुआ तो **हज़रत अली** ने आप से बैत नहीं की इसी वजह से आप कमज़ोर थे ज़्यादा तर जगहों पर बगावत की बू आती रहती थी एक जगह की बगावत ख़त्म होती तो दूसरी जगह बगावत हो जाती थी।

(जंगे)

आपके वक्त में तमाम जंगे लड़ी गई मक्के में एक जगह एहले तहामा जो के हिजाब का हिस्सा था। आप को मालूम पड़ा के यह लोग मदीने पे हमले की तैयारी कर रहें हैं। वहाँ की अलम बरदारी बनी क़ज़ा के हाथ में थी। आप ने अपनी तरफ से उमरू-आस को अलम बरदार बनाकर ४००० का लश्कर के साथ भेजा और वहाँ की बगावत को कुचल दिया।

फिर तैफ से बगावत उठी तो आप ने स्वेद-बिन-मरकान को ८००० के लश्कर के साथ भेजा और इस बगावत को भी कुचल डाला और कुछ दिनों के अन्दर ही पुर-सुकून हासिल हुआ।

आप के वक्त में तमाम काफिर हुकूमतें थी। उस वक्त इराक में दोनों दरिया (दजला और फराद) के बीच का ऊपरी हिस्सा जर-जीर-तुल-अरब कहलाता था और मदयन के हिस्से में दारूल सल्तनत के हिस्से में बाबुल कलिदिया, मिसोपोटोनिया, और फारस, तिर्मान, मजीन्दरान, वलख खुरासान, यह सभी काफिर हुकूमते थी और काफिरों के अख्तियार में थी।

फुरात के ऊपरी हिस्से में हिरात और उबला शहर थे। उस वक्त हिरात का बादशाह अयाज़ बिन कपसिया ताई था।

उबला में इरानी गवर्नर हरमिज़ था। इनके अन्दर २ कबीले थे **१) कबीला-ए-वैल (वैयेल)** इसके सरदार का नाम **मुसन्ना बिन हारिस** था और दूसरा कबीले का सरदार जिसका नाम **सुवैद अजली** था दोनों ने सोच क्यों ना हज़रत अबुबकर की हुकुमात पर कब्ज़ा करलिया जाए लेकिन तमाम कोशिशो के बावजूद ना काम रहे। फिर दोनों सरदारों ने अबुबकर के पास जा कर बैत कर ली, इस दरमियान इराक शहर में जज़िया (टैक्स) की शुरूआत हो गई और यह पूरा माल बैतुल माल में भेजा जाता था। ताके बैतुल माल भरा रहे और जंगो में तकलीफ ना रहे। बैतुल माल को मज़बूत करने के लिए हज़रत अबुबकर ने रसूल (स.अ) की साहब ज़ादी जनाब-ए-फ़ात्मा ज़हेरा का फिदक बाग़ भी बैतुल माल में जमा कर लिया। जब के हिबा नामा (वसीयत) में रसूल (स.अ) ने अपनी बेटी के नाम किया था। इस बाग़ को लेने के लिए फ़ात्मा ज़हेरा ने अपना दावा पेश किया। लेकिन हज़रत अबुबकर ने कहा की दावे के साथ २ गवाह भी चाहिए। तब फ़ात्मा ने अपने शोहर हज़रत अली और दूसरे उम्मे इमाम मान को पेश किया। लेकिन फिर भी आपने बाग़ देने से इनकार कर दिया। इसके बाद फ़रज़न्दे साहिब ने हज़रत अबुबकर (र.अ) से कहा के रसूल (स.अ) ने २ हुजरे हमें दिए थे लेकिन मेरे पास कोई सबूत नहीं है। १) वादी-ए-जफी। २) वादी-ए-अकिक। दोनों को बतौर इनाम दिया गया था।

(मुगेरा-बिन-शीबा)

साद-बिन-उबैदा का कातिल हरमिज़ ने मदद मांगी उस वक्त इरान का बादशाह यद्दुर जरद था उसने हवास के गवर्नर करांग से, इसने एक जगह जिसका नाम माजा था जो की दरिया-ए-मुसना के करीब थी। जब उसने जंग-ए-मज़ार फ़तेह करली तो वजला की तरफ बढ़े। इसके सीपेसालार **"हज़ार मर्द"** को खालिद बिन वलीद के खिलाफ **५०,०००** की फ़ौज के साथ उतारा। लेकिन इस जंग में **"हज़ार मर्द"** मारा गया। और इसके अलावा **४०,०००** लोग और मारे गए।

वजला को फ़तेह करने के बाद **जंग-ए-उल्लिस** शुरू हो गई। इरान के बादशाह ने अपने ताकतवर सीपेसालार बरहम जादू को भेजा। बक्षी निसा पर **जाबन**, जोकि **१००,०००** का लश्कर लिए तैयार था उस्से जंग हुई यह जंग २० दिन मुसलसल चलती रही इस में **७०,०००** इरानी मारे गए और इस्लामी फ़ौज के **१०,०००** लोग शहीद हुए। खालिद बिन वलीद को फ़तेह हासिल हुई। कुछ दिनों बाद खालिद बिन वलीद ने **इम्गीशिया** को भी फ़तेह करलिया। यहाँ पर खालिद ने इरानी फौजों के सामने ३ शरतें रखी जो इस तरहा थी।

१) अगर तुम ज़िंदा रहना चाहते हो तो जज़ीया दो।

२) अगर तुम जिंदा रहना चाहते हो तो मुसलमान हो जाओ।

३) मरने के लिए तैयार रहो।

इरान का एक आलिम जिसका नाम "आज़ाएविया" था उसने मशवरा दिया के तुम्हे डरने की ज़रूरत नहीं। यह जंग **जंग-ए-अंबार** के नाम से मशहूर हुई। शिर जये की नुमैन्दिगी में २००० की फ़ौज के साथ भेजा। और फौजियों ने चारों तरफ से तीर वगैरह बरसा दिए और कुछ ही दिनों में किले को फ़तेह कर लिया। फ़ौजे आगे बढती है कातिल बनी-साली और उसका सरदार अक्का ने हरमन जादू से कहा आप पहले लड़ो और इस जंग में भी खालिद बिन वलीद को फ़तेह हासिल हुई। लेकिन इस फ़तेह में इस्लामी फ़ौज के एक सहाबी "बशर बिन सईद अंसारी" शहीद हुए।

(जंग-ए-दुमतुल जन्दाल)

यह जगह मुल्के शाम के नज़दीक हुई। हज़रत अबू-बकर ने अयाज़-बिन-गानं को १०,००० के लश्कर के साथ भेजा और यहाँ पर भी कामयाबी हासिल हुई यहाँ पर भी खालिद-बिन-वलीद की मदद ली गई। जैसे ही उन के सरदारों। १) अकीदर-बिन-अब्दुल मलिक २) जुदी -बिन-शबिया। को खबर मिली तो वह वहां से भागे लेकिन

अकीदर मारा गया और दूसरा सरदार किले में घुस गया लेकिन (जुदि) वह भी मारा गया। यहाँ पर खालिद-बिन-वलीद ने जुदी की लड़की के साथ जिनाह कर दिया।

(जंग-ए-फ़राज़)

खालिद बिन वलीद ने यहाँ पर भी एक शानदार जंग लड़ी। खालिद बिन वलीद के खिलाफ रोमी और इसाई एक साथ मिलकर जंग कर रहे थे इस जंग में **१,००,०००** काफिर मारे गए जैसे जंग फ़तेह हुई हज़रत अबुबकर का हुकुम हुआ के अब अपनी फौजों को मुल्क-ए-शाम की तरफ ले जाओ खालिद बिन वलीद को तमि की जगह भेजा जोके तहेफ़ के पास है। और हुकुम मिला जिहाद के लिए लश्कर तैयार करो। वलीद बिन अकबर, जुल बिन तल्हा और अकमा बिन अबू जहेल इन तीनो की रहनुमाई में दनिमुस्क पर हमला बोला। लेकिन इन्ही वजहों से हार का सामना करना पड़ा इस लिए जंगे फ़राज़ के बाद खालिद बिन वलीद को हुकुम मिला था के वह शाम कि तरफ बढ़े। जंग के पहले अच्छी तरह पूरे मुल्क-ए-शाम के शहरों का मुआईना किया गया किसि तरह मुल्क-ए-शाम के बड़े शहरों को घेरा जाए ताकि फ़तेह हासिल करने में ज्यादा मुश्किल ना आए। यानी एक नक्षा बनाया गया और उस नक्षे में शाम के ७ बडे शहरों को हमले के लिए चुना गया ये शहर इस तरह थे।

१) फ़नकिया।

२) हबूस।

३) हमूस।

४) अन्ताकिया।

५) दामिश्क।

६) फिलिस्तीन।

७) उर्दूल।

रूमियों की फ़ौजे हबूस, हमूस और अन्ताकिया में रहती थी। इस्लामी फ़ौज ने अपनी फ़ौज को ४, हिस्सों में तकसीम किया। पहली टुकड़ी की कमान अबू उबैदा के सुपुर्द करके हमूस पर हमले के लिए भेजा।

दूसरी टुकड़ी की कमान जनाबे उमरू आस को सौंपी और फिलिस्तीन भेजा गया। तीसरी टुकड़ी की कमान जनाबे यज़ीद बिन अबू सुफियान को सौंप कर दमिश्क भेजा और छोटी और आखरी टुकड़ी किया कमान शेरजाल बिन हसना को सौंपी और उर्दूल पर हमले के लिए भेजा। हर टुकड़ी में १०,००० की फ़ौज थी। इस जंग में ३०० बड़े सहाबी शरीक हुए। उधर रोम के बादशाह हर्कुल को जैसे ही खबर मिली के इन शहरों पर हमला होने वाला है उसने वहाँ का दौर किया और दमिश्क में जाकर बैठ गया।

हर्कुल ने **९०,०००** की फ़ौज हमूस में खड़ी की और ६०,००० की फ़ौज फिलिस्तीन में, दमिश्क में ५०,००० की फ़ौज और उर्दूल में **४०,०००** की फ़ौज। यह जंग **जंग-ए-यरमुक** के नाम से मशहूर हुई। यह वक्त की सब से बड़ी जंग थी। जिसमें इस्लामी फ़ौज के तकरीबन **३०,०००** लोग शहीद हुए और हर्कुल की फ़ौज के **१,४०,०००** फौजी क़त्ल हुए। यह जंग ३० जमिउस्तानी सन १३ हिजरी को हुई थी।

हज़रत अबुबकर के दौर में इन तमाम जंगो को लड़ा गया और हज़रत अबुबकर ने जब तक खिलाफत की वह जंगो में उलझ कर रह गए। आप का **इन्तेकाल २२ जमिउस्तानी** को बिमारी की वजह से हुआ। आपके इन्तेकाल के बाद खिलाफत की बाग़-डोर **उमर इब्ने खत्ताब** के हाथ आई। आप की विलादत वाकिए फिल के **१३** बरस के बाद पैदा हुए और कबिले बनी से ताल्लुक रखते थे आप के वालिद का नाम खत्ताब बिन नौफिल था। आप के बचपन का नाम **आमिर** और बाद में बिगड़ कर **उमर** हो गया। आप लकड़ियों का कारोबार करते थे। आप काफी सख्त मिजाज़ थे और सख्ती करते थे। आप ने बकरियों का कारोबार भी किया और आप गेहुओं का कारोबार भी करते थे आप की लम्बाई **८ १/२** फिट थी और दाड़ी बहुत घनी थी। लंबा चेहरा और रंग ज़र्द गोरा था

। जब आप भीड़ में चलते थे तो ऐसा लगता था जैसे कोई ऊठ (कैमल) पर सवार आ रहा हो। माँ का नाम **हंतमा बिनते हाशिम बिन मुगीरा बिन अब्दुल गनी** आप **अबू जेहल** की चचेरी बेहन थी। आप (हज़रत उमर) की ७ बीवियां थी।

१) *जैनब बिन्ते मुजून* :- इन से एक बेटी हुई इन का नाम था हमसा और एक बेटा हुआ जिनका नाम अब्दुल्लाह था.

२) *करतीबा बिन्ते अबी उमय्या* :- आप से एक बेटा हुआ जिनका नाम अबिउल्लाह था जो एक बहुत बड़े आलिम थे।

३) *जमीला बिन्ते आसिम* :- आप से भी एक बेटा हुआ जिनका नाम अब्दुल रहमान रखा।

४) *कतिबा बिन्ते ज़ैद* :- आपको कोई औलाद नहीं थी।

५) *उम्मे हाकिम बिन्ते हरिस* :- इनसे एक बेटा हुआ जिसका नाम मुजीर रखा।

६) *अस्मा (मलिका) बिन्ते जलूल खिजई* :- आप से एक बेटा हुआ जिनका नाम आसिफ अबू सहामा।

७) *फखिहा या मीना* :- आप से एक बेटी हुई जिसका नाम उम्मे कुलसुम।

(वाकिया-अबू-शाहामा)

अबू शाहामा ने शराब का नशा कर लिया और जब इस की खबर वक्त के खलीफा यानी हज़रत उमर को मालूम हुआ तो आप ने सब के सामने तो दुर्रे (कोड़े) लगवाए और ये दुर्रे (कोड़े) उन्होंने अपने हाथ से मारे और यहाँ तक अबू शाहामा बेहोश हो गए लेकिन फिर भी जो कोढो की मिकदार थी वह पूरी हुई और अबू शाहामा कोढो की मार को सह न सके और उनका इन्तेकाल हो गया। **हज़रत उमर ने अपने दौर में मेहर मुक़र्रर कर वाया।** १४,०००

दिरहम से ऊपर मेहर नहीं हो सकता और कम से कम की कोई हद मुक़र्रर नहीं। आप ने अपने दौर में १००० मस्जिद तामीर करवाई। जिस में ३४० जुमा मस्जिद थी। तक़रीबन १००० मिम्बर बनवाए।

कैद खानों की हदें मुक़र्रर करवाई। बुज़ुर्गों की तनखा मुक़र्रर की ताकि उन्हे तकलीफ न उठानी पडे। आप हज़रत ने १० साल तक खिलाफत की। आप की शहादत १ मुहर्रम २४ हिजरी को हुई। आप को मारने वाले का नाम अबू लोलो था। जरमुक की फ़तेह के बाद खिलाफत मिलते ही आप ने हुकुम जारी किया।

१) फहल। २) दमिश्क। ३) हमूस। ४) फिलिस्तीन। इन चारों शेहरो को जंग में उलझाए रखा जाए।

(जंग-ए-दमिश्क)

आप (हज़रत उमर) ने हुकुम दिया दमिश्क को चारो तरफ से घेर लिया जाए। मगरिब की जानिब से अबू उबैद को कमान सौंपी गई और मशरिक से खालिद बिन वलीद को और जुनूब की तरफ से शरजील और उमरू-आस को कमान सौंपी गई।

दमिश्क की बाग-डोर नुसरत बिन नस्तुत के हाथ में थी। इसने खालिद बिन वलीद से सुलेह की बात की। लेकिन मना कर दिया। नुसरत बिन नस्तुत अबू उबैदा के पास गया सुलह लेकर इस तरह आप ने मशवरा करके हमूस जुल्कता दमिश्क फिलिस्तीन को फ़तेह करलिया। यहाँ पर आपने (हज़रत उमर) बाब-ए-जबिया खोला। जिस का नाम रखा गया **यसुवा**।

(जंग-ए-फ़हेल)

यह जंग रोमीयों ने सरदार सुक्राल बिन मख्रान की नुमाइंदगी में लड़ी। इस्लामी फौजों ने एक साल मुसलसल जंग की और ८०,००० रोमियों को क़त्ल किया और आखिर कार इस्लामी फौजों को फ़तेह हासिल हुई।

जंग-ए-फ़हेल के फ़तेह के फ़ौरन बाद हज़रत उमर ने अबू उबैदा के ज़रिए ये पैगाम भेजा की खालिद बिन वलीद अब तुम सरदारी से हटा दिए गए हो और तुम्हारी हैसियत सिर्फ एक सिपाही जैसी है।

आप हज़रत उमर को खालिद बिन वलीद की तमाम नाग़वार और गैर शरीयती हरकतों के बारे में बराबर खबरें मिल रही थी। ख़ास कर जब उसने जूदी शबिया की लड़की के साथ जिनाह किया था इस से आप बेहद खफा थे और मौके की तलाश में थे के कब खालिद को औदे से हटाया जाए। इस लिए आप ने सही मौका समझते हुए खालिद बिन वलीद को बरखास्त कर दिया।

अब हज़रत उमर ने हुकुम दिया के हमूस पर हमला करो और यह भी ताकीद की के बिना इज़ाज़त किसी भी तरहा से हमला न करना। एक सिम्त से अबू उबैदा ने हमला किया और दूसरी सिम्त से उमरू-आस के साथ खालिद बिन वलीद थे। **{एक बार रसूल-ए-पाक (स.अ) ने फ़रमाया था के अबू उबैदा अमीन है}**। इस जंग में हर्कुल ने अपने ख़ास सीपे सलार **तागेस** को हुकुम दिया के उमरू-आस को क़त्ल करदो और षगीस से कहा तुम खालिद को क़त्ल करो। इस जंग का नाम **जंग-ए-मरजूर रोम** रखा गया। इस जंग के अलावा शहर, आबन शहर, बालिग शहर, बाग्राज शहर, शहर गसान, शहर तनोउख, शहर हरसूल अड्रूस यह तमाम शहर बिना जंग किए हुवे सुलह से फ़तेह हो गए। हरकुल निहायत परेशान रहने लगा हर तरफ उसकी हार थी और काफी मायूस था उसके दिमाग में सिर्फ यह ही चल रहा था के कहीं पूरा रोम इस्लाम के हाथ में न चला जाए। इसलिए हरकुल अब रोम से भाग कर अन्ताकिया शहर पहुंच गया। यहाँ पहुंचने के बाद अपने बचे कुचे लोगो को इकट्ठा करना शुरू किया और एक नइ जंग का मन्सूबा बनाने लगा इसने अपने लोगो से कहा सब एक हो जाओ और हमला करो नहीं तो पूरा रोम इस्लाम के कब्ज़े में हो जाएगा।

इधर अबू उबैदा ने हरकुल की बड़ी फ़ौज देख कर हज़रत उमर से कहा की आगे बढ़ना मुमकिन नहीं है। लेकिन वहां की अवाम ने इस्लामी फ़ौज का किरदार देख कर कहा के हम आपके साथ हैं और हम आप से जंग करना नहीं चाहते। इस तरह आसानी से इस्लामी फ़ौज को फ़तेह मिली इस के बाद हज़रत उमर ने हुकुम दिया के हबल शहर के तरफ बढ़ो। इधर अन्ताकिया में भी सुलह हो गई। लेकिन बाद में ये लोग पलट गए इसलिए इस्लामी फौजों को जंग करनी पड़ी जिस में फ़तेह हासिल हुई।

(जंग-ए-अजनादीन)

इस जंग का नाम गाज़ा शहर के अजनादीन नाम की जगह पर जंग होने की वजह से इस जंग का नाम जंग-ए-अजनादीन रखा गया।

एलिया और रमला इन दोनों जगह पर जंग करने के लिए जनाब अर्थ बून, अल्कमा बिन हाकिम फारसी और मसरूफ अक्की इन तीनो को बैतुल मुक़द्दस भेजा गया।

अबु अय्यूब मलिकी को रमला में जंग के लिए भेजा। अर्थ बून को हार का मूह देखना पड़ा और वह भाग गया इस जंग में **४०,०००** रूमी मारे गए। इस जंग का नतीजा ये हुआ जितने भी छोटे-छोटे शहर थे। जैसे नाफा, नुब्लीस, हुम्वास, जब्रीन, गाज़ा, अक्का,बेरूत, सईदा, अफ्फमिया, औसुनकलान, ये तमाम शहर बिना जंग किए हुए हासिल हो गए।

(फ़तेह-बैतुल-मुक़द्दस)

यह जंग **शाबान के महीने में १५ हिजरी** को लड़ी गई। इस्लामी फ़ौज को तमाम बडे बडे सरदारों ने जैसे **उमरू-आस, खालिद बिन वलीद, माविया बिन अबू सुफियान, रहमा, अबू उबैदा**, चारो तरफ से रुमियो को घेर लिया। इतना बड़ा लश्कर देख कर रुमियो ने हथियार डाल दिए और पैगाम भेजा के हम आप लोगों से मुहाइदा करना चाहते है। इसलिए आप लोग अपने खलीफा हज़रत उमर को बुलाए। हम उनके सामने ही और उनकी मौजूदगी में मुहाइदा करना चाहते हैं।

जब यह पैगाम हज़रत उमर को मिला तो आप ने अपने ख़ास आलिमो से मशवरा किया। क्या मेरा जाना और मुहाइदा अपनी मौजूदगी में करना दुरुस्त रहेगा। तब आलिमो ने एक राय से कहा आप को जाने की ज़रूरत नहीं है। आप अपने मौजूदा सहाबाओं को मुहाइदा बनाने का हुकुम दें। तब अबू उबैदा की रहनुमाई में दोनों तरफ के फरीक **जामिया** शहर में जमा हुए। मुहाइदे की शरतें इस तरहा थी।

१) अब कोई गिरजा घर नहीं बनेगा।

२) कालिस और गिरजा में जब चाहे कोई भी आ-जा सकेगा।

३) कोई भी ईमान वाला अगर आपके घर में आता है तो ३ दिन तक उसकी मेहमान नवाजी होनी चाहिए।

४) यहूदी और ईसाई अपने नाम मुसलमान के नाम पर नहीं रखेंगे।

५) यहूदी और ईसाई इस्लामी लिबास नहीं पहन सकते।

६) शाराब पीना और बेचना सकत मन है।

७) बाजारों में ईसाई और यहूदी अपनी किताबें नहीं बेच सकते।

८) मुसलमानों के अलावा कोई भी अपने बच्चों को कुरआन का इल्म नहीं देगा।

९) कोई भी ईसाई और यहूदी मुसलमानों से ऊँचे और बडे घर नहीं बना सकता।

१०) गिरजा घर के घंटो को जोर से न बजाय जाए।

११) मुसलमानों का एहतराम करना होगा।

१२) ईसाई और यहूदी को सर का अगला हिस्सा मुंडवाना होगा।

१३) अगर कोई यहूदी या ईसाई मज़हब-ए इस्लाम क़ुबूल करना चाहता है तो उसे कोई रोक नहीं सकता।

१४) नई मिलकियत खरीदना और बेचना दोनों बंद।

१५) दोनों कौमो को जज़िया (टैक्स) देना होगा।

मुहाइदा बनने के बाद दोनों फिरको ने उस पर अपनी अपनी मोहर लगा ली। अब हज़रत उमर ने बैतुल मुक़द्दस में मस्जिद तामीर करने का हुकुम दे दिया। रमला शहर में भी ये ही मुहाइदा लागु करवाया गया और फ़तेह हासिल हो गई।

यहाँ पर हज़रत उमर ने एक फैसला यह भी किया। इसके तहत अब्दुल रहमान बिन औस को आधे फिलिस्तीन का गवर्नर बना दिया और बकिया लोगों को मदीने वापस बुला लिया। हज़रत उमर के वक्त में इतनी जंगे नहीं लड़ी गई और आप हज़रत ने भी इस्लाम फैलाने के लिए कोई भी मौक़ा गवाया नहीं। इसलिए आपने १० साल के खिलाफत के दौर में यहूदियों और इसाइयो को चैन से बैठने नहीं दिया और बादशाह हरकुल जो कई बार शिकस्त खा चूका था उसको भी जिद थी। की वह मुसलमानों को अपने ऊपर हुकूमत करने नहीं देगा। इसलिए एक बार फिर हरकुल ने अरमीनिया, जज़ीरा, और मिस्र की हुकूमतों को एक बार फिर इखटटा किया और एक बड़ा लश्कर तक़रीबन ५०,००० का लश्कर तैयार किया और कुतिव्यास को अलम बरदारी सौंपी। इस फ़ौज ने तमाम छोटी मोटी जंगे जीत ली। यहाँ तक शुमाली फिलिस्तीन पर भी कब्ज़ा जमा लिया। फिर ये बात बात ख़त के ज़रिए मदीने पहुंची तो हज़रत उमर ने इराक के गवर्नर को हुकुम दिया के मिस्र और कूफ़े से ४००० का लश्कर

रवाना किया जाए, इस लश्कर में ३ बडे सिपेसालार सहेल बिन अदि, अब्दुल्लाह बिन ऐत्बान और वलीद बिन अक़बा इसके अलावा इस की सरदारी अयाज़ बिन गमन को सौंपी गई। इस जंग में कुलिउस को शिकस्त हासिल हुई और उसको भागना पड़ा। इस तरह हमुस बच गया। मुसलमानों ने कई किलो मीटर तक इन लोगों को कुचल डाला और **३** शहरों को तबाह कर दिया और मैदान बना दिया। तक़रीबन **३००** मील लम्बा मैदान बना दिया फिर भी मुसलमान आगे बढते गए. इस बीच अयाज़ बिन गमन को हुकुम मिला जंग को रोकना नहीं है आगे बढते जाओ इस वक्त अयाज़ बिन गमन का खौफ इतना छा चूका था की यारा, सरोज, जज़ीना, जुस्तूर, हुम्वास, हरजान, मसूल, मलालिया यह सभी शहर बिना जंग किए हुए फ़तेह हो गए यहाँ से जहाज़ी बेडो के ज़रिए समंदर तक भी कब्ज़ा हो गया यह वक्त **१९ हिजरी** का है।

लेकिन यहाँ एक बुरी खबर ये हुई की "करिया औम्वास" से ताउन की बीमारी शुरू हो गई इस बीमारी में **३५,०००** मुसलमान शहीद हुए और बड़े सहाबाओ के बेटे भी इस में शहीद हो गए। इस में हज़रत अबू-बकर के बेटे अब्दुल्लाह यज़ीद बिन अबू सुफियान, हरशाम बिन हाशिम भी शहीद हुए इस के अलावा मक्का के हिजाजा शहर में सूखा पड़ गया।

इस जंग के बाद हज़रत उमर ने **माविया बिन अबू सूफियान** को **दमिश्क का गवर्नर बना दिया** और उमरू आस को शाम का गवर्नर मुक़र्रर कर दिया। इसी दरमियान अब्दुल्लाह बिन उमर की शादी सुफिया बिनती अबू उबैदा से **१६ हिजरी** में हो गई।

हज़रत उमर ने अपने आलिमो से कहा महीनो के हिसाब से एक कैलंडर बनाया जाए। तो यह केलिन्डर १६, जुलाई ६२२ इसवी में (१ मोहर्रम से पहला महिना शुरू हुआ)।

(जंग-ए-कद-ए-आतिफ)

इस जंग की रहनुमाई ज़ुर दुल ज़ुर के बादशाह ने की। उसने सुस लूम बिन फरक शाद को **१,००,०००** का लश्कर देकर हिरात भेजा।

इस्लामी फ़ौज की रहनुमाई हज़रत अबू उबैदा कर रहे थे आप ने अबू उबैद बिन मसूद सक्की और मुख्तार के बेटे जिस में एक का नाम साद बिन आबिद अंसारी दूसरे का नाम सलाम बिन किस अंसारी था। जाली-नूस ने ३०,००० का लश्कर जर्दुल-जार बादशाह कहने पर भेजा था। शहर कसकर में हमला करने के इरादे से। लेकिन अबू उबैदा ने पहले ही २०,००० का लश्कर तैनात कर दिया था। इसीलिए इस्लामी फौजों को ज्यादा मशक्कत नहीं करनी पड़ी. जाली-नूस को हार का मूह देखना पड़ा और जान बचाकर भाग गया।

इस हार से सुस्लुम बौखला गया और गुस्से में आकर जाली-नूस बरहम जादू को भेजा लेकिन यहाँ पर भी इन लोगों को हार का ही मु देखना पड़ा।

(जंग-ए-जरूर)

यह जंग शाबान **१३ हिजरी** में लड़ी गई। इस जंग में एक बार फिर बरहम जादू और जाली-नूस को **१,००,०००** का लश्कर के अलावा **३००** हतियों की भी फ़ौज थी। यानी काफी मज़बूत ताकत के साथ यह लोग कुद नतिफ्फ़ को पार करते हुए दरिया-ए-फ़राज़ के पास आकर जमा हो गए।

इधर मुसलमानों का लश्कर अबू उबैदा की रहनुमाई में जो की **१०,०००** के लश्कर की नुमैनदीगी कर रहे थे। यह लश्कर मुस नाम की जगह पर जमा हो गया। यानी के अगर अबू उबैदा को हमला करना है तो वह दरिया-ए-फ़राज़ को पार करें और अगर बरहम जादू को हमला करना है तो वह दरिया-ए-फ़राज़ को पार करें। काफी इंतज़ार करने के बाद इस्लामी फौजों ने फैसला किया के हम लोग दरिया-ए-फ़राज़ को पार करके काफिरों पर

धाबा बोल दें। जब यह बात मशवरे में तय हो गई तो इस्लामी फ़ौज ने २० दिन तक लगातार मेहनत की और पुल तैयार कर लिया और काफिरों पर हमला बोल दिया इस्लामी फ़ौज अरबी घोडे पर सवार थी हाती को देख कर घोड़ो में भगदड़ मच गई। तभी अबू उबैदा ने यह हुकुम दिया के हाथियों की सूंड और टांग काटते जाओ। सभी सिपहियों ने यही तरीका अपना लिया, इसी बीच हाथियों पर हमला करते वक्त अबू उबैदा एक हाथी के पैर के नीचे कुचल गए और उनकी शहादत हो गई इसके अलावा साद भी शहीद हो गए। सलाम बिन कैस अंसारी भी मारे गए मुसन्ना बुरी तरहा से ज़ख़्मी हो गए। मुसलमान इस जंग को हार गए।

(जंग-ए-बौबा)

यह जंग रमज़ान के महीने में १३ हिजरी में लड़ी गई। यह जंग कबीले बहिला के सरदार ज़रीन बिन अब्दुल्लाह बिजली ने लड़ी और यह जंग भी इस्लामी फौजों ने जीत ली। शाम तक लड़ने के बाद दुश्मनों ने हतियार डाल दिए. इस जंग में मुसन्ना, जनाब अनस बिन हिलाल सभी शामिल थे। यहाँ पर भी फिर्जान और सुस्लुम काफिरों की तरफ से जंग कर रहे थे। हुमरान और फराद जंग छोड़ कर भाग गए। लेकिन हुमरान मारा गया। इरानी फौजों में से **१,००,०००** फौजी मारे गए। और इस्लामी फौजों की तरफ से **८,५००** लोग शहीद हुए।

इसके बाद जनाब मुसन्ना को हिरा की तरफ जाने का हुकुम मिला।

(जंग-ए-कद-दासिया)

यह जंग इराक शहर की है। क्यों के जर-जुल-जाल तमाम जंग हार चूका था। अब वह कामयाबी हासिल करने के लिए काफी मज़बूत होना चाहता था। इस लिए उसने इस्लाम के सभी दुश्मनों को एक होने की अपील जारी

की और कहा इस वक्त हम सभी को अपने तमाम गिले शिकवे भूल कर एक होना पडेगा तभी हम इस्लामी फौजों को शिकस्त दे सकते हैं। इस अपील के बाद काफिरों का एक बहुत बड़ा लश्कर जंग के लिए इराक में इखटटा हो गया। क्यों की इराक की बाग़-डोर मुसन्ना के हाथ में थी। इसलिए मुसन्ना ने हज़रत उमर को एक ख़त के ज़रिए पूरे हालात बता दिए। हज़रत उमर ने कहा की मैं खुद जंग करने आ-रहा हूँ। लेकिन तमाम दूसरे सहाबाओ ने आपको जाने से मन कर दिया इसलिए हज़रत उमर ने जनाब साद बिन अबी यूस को बुलाकर ४,००० के दो लश्कर दिए और भेजा और एक ३,००० का लश्कर बनी असद की रहनुमाई में भेजा और इसके बाद अशअस बिन कैस कुंडी की अलमबरदारी में २०,००० का लश्कर भेजा। इस दरमियान इराक से जनाब मुसन्ना की वफात की खबर आई इस लिए हज़रत उमर ने बशीर बिन खसासिया को सरदार बनाया और ताहा बिन ख्वालैद, उमरू बिन यसरब, असीम बिन उमर बशीर, शिरजाल बिन समद इन सब को तक़रीबन ४०,००० के लश्कर के साथ जंग के लिए भेजा इसके अलावा हाशिम बिन औत्बा को शाम से १०,००० के लश्कर के साथ रवाना किया गया इस तरहा इराक के कद़ासिया नाम की जगह पर इस्लामी फौजों ने अपना डेरा डाल दिया। इधर काफिरों की तरफ से जंग की बाग़-डोर सुस्लम और जाली-नूस के हाथ थी। इनके पास तक़रीबन १,२५,००० का लश्कर था और ११,००० हाथी। काफी बड़ी तादाद में काफिरों का लश्कर मौजूद था। तक़रीबन २ महीने तक दोनों तरफ की फौजें खाड़ी रही। ना तो इधर से किसी ने हमला किया ना तो उधर से किसी ने हमला किया काफी इंतज़ार के बाद यह तय हुआ के क्यों ना इन लोगों में ईमान की दावत दी जाए। इसलिए हज़रत उमर ने १४ आलिमो का एक दसता जनाब नुमान बिन मुकीम की सदारत में जनाब ज़रीन बिन अब्दुल्लाह, आसिम ताहि बिन ख्वालैद लेकिन बात बनी नहीं। यानि लोगो ने इस्लाम कबूल करने से साफ़ इनकार कर दिया और एक खतरनाक जंग हुई। जिसमे जनाब हिलाल ने सुसलुम को दुज्ला में क़त्ल कर दिया काफिरों के १,००,००० फौजी मारे गए इसके अलावा जाली-नूस भी मर गया। इस तरह काफिरों की एक बड़ी शिकस्त हुई। हज़रत उमर ने बतौर इनाम जनाब हिलाल को एक कमर-बंद दिया जिसकी उस वक्त की कीमत ७०,००० दिरहम थी और एक ताज दिया जिसकी उस वक्त की कीमत १,००,००० दिरहम थी। दुश्मनों का जो परचम था वह भी तक़रीबन ३०,००० दिरहम का था। हज़रत उमर ने मदीने से हुकुम भेजा साद बिन अबी व्यास यहीं रहेंगे। ३ महीने बाद हुकुम आया के अब आगे बढ़ो **असी** फ़तेह हुआ,

सबद फ़तेह हुआ अब साद बिन अबी व्यास ने **६०,०००** का लश्कर बना लिया और इस लश्कर ने बाबुल में जमा हुए काफिरों के लश्कर जिस में की फिर्जान, हर्मिजान, महरान मौजूद थे। इन लोगो पर हमला बोल दिया, लेकिन इन लोगो में इस्लामी फौजों का इतना खौफ था के यह सभी लोग बाबुल छोड़ कर नेहरवान भाग गए। इस के अलावा हरमिज़ान एह्जाब की तरफ भाग गया और मेहरान राजी मदान की तरफ भागा।

(बहरे शेर)

यहाँ पर **१००** पालतू शेर थे जो की कैद में थे। इन लोगो ने शेरों को आजाद कर दिया यानि दुश्मनों ने ताकि ईमान वाले मारे जाए। लेकिन खुदा की कुदरत देखिए के हाशिम बिन औतवात ने कहा के इन शेरों से मुकाबला करो थोडा बहुत नुक्सान तो हुवा लेकिन फ़तेह हासिल करली, फिर लगातार २ महीने तक यहीं पर रहे।

(फ़तेह मदियान)

इस्लामी फौजों ने एक चाल के तहत फजर की नमाज़ के बाद अचानक हमला करदिया। जिस से काफिरों में तलातुम मच गया और दजला नदी पार करते हुए हमला कर दिया। यर-जुल-जल हलवान की तरफ भागा और वहां की अवाम ने कहा हम जंग नहीं कर सकते।

(कसर-ए-अबिज)

इस्लामी फौजों को इस जगह से बहुत माल मिला सोना चांदी तक़रीबन, २ ऊंट भर चांदी मिले और फुरचे फेरिस्तान जो की तक़रीबन ६० गज़ लम्बा और ६० गज़ चौड़ा था जिस में हीरे जेवरात भरे हुए थे जिस की कीमत २५ करोड़ दीनार थी। पुरे माले गनीमत की कीमत ३०० करोड़ थी। १२००० दीनार ९०० ऊंट हर सामान बैतुल माल में जमा कराया गया।

(जंग-ए-जलूल)

तमाम जंगो का हाल देखने के बाद काफ़िर नई तरह से जंग करना चाहते थे इस लिए जंग-ए-कद्दासिया से भागा हुवा मेहरान रजी ने अपने लोगो को इकट्ठा किया और कहा के मुसलमानों से लड़ना आसान काम नहीं है। इसलिए हमे कोई नई तरकीब सोचनी पडेगी तब कहीं जाकर मुसलमानों से मुकाबला कर सकते है। इसलिए इसने अपने किले के चारो तरफ बहुत बड़ी और लम्बी खन्दक खोदि। इसके अलावा मुसलमानों को रोकने के लिए खन्दक की बाहर की ज़मीन पर कीलें गाढ़ दिए गए। ताकि इस्लामी फ़ौज उनतक ना पहुंच पाए लेकिन इसके बावजूद साद बिन अबी व्यास की अलाम्बर्दारी में इस्लामी फौजों ने काफिरों को चारो तरफ से घेर लिया। तक़रीबन ८० दिन तक लगातार यह लोग अपनी जगहों से इस्लामी फौजों तक तीर और बरछी चलाते रहे। अल्लाह की मदद आई एक बहुत तेज़ आंधी चली जिस वजह से काफ़िर लोग अपनी खोदी हुई खन्दक में खुद बा खुद गिर पडे। इधर से साद बिन अबी व्यास ने एक ज़ोरदार हमला किया जिस वजह से ईरानियो की ८०,००० की फ़ौज क़त्ल करदी गई और इमान वालों की तरफ से ५००० लोग शहीद हुए. लेकिन यर-जुल-जल फिर यहाँ से भाग निकला और इस्लामी फौजों ने यहाँ पर कब्ज़ा जमा लिया।

हर्मिजान भाग कर एहवाज़ की तरफ भागा इस्लामी फौजों ने उस पर फिर हमला बोला और एक छोटी सी जंग के बाद हर्मिजान गिरफ्तार कर लिया गया।

हर्मिजान ने फौजियों से फ़रियाद की के मुझे अपने खलीफा यानि हज़रत उमर के पास पेश करो। जब हर्मिजान हज़रत उमर के सामने पेश हुवा तब हज़रत उमर ने उससे कहा फरमाओ क्या चाहते हो हर्मिजान ने जवाब दिया मुझे पानी चाहिए गुलामो ने पानी पेश किया अब हज़रत उमर ने कहा पानी ख़त्म होने तक तुम्हारी अमान है हर्मिज़ान फ़ौरन बोला मैं पानी नहीं पियूँगा फिर दुबारा हज़रत उमर ने उससे कहा इस्लाम कबूल करलो। हर्मिजान ने कहा मुझे इस्लाम कबूल है। अब हज़रत उमर ने हर्मिजान को मदीने से अन्दर ही एक महल अता किया। इसके अलावा २००० दिरहम हर महीने देते रहे।

(जंग-ए-ताऊस)

तमाम जंगे जीतते हुए साद बिन अबी व्यास को जंगो में महारत हासिल हो गई थी। लेकिन इसके बावजूद एक शक्स आला हज ने बिना साद बिन अबी व्यास के इज़ाज़त के और यह सोच कर मैं अकेला जंग जीत सकता हु। इसलिए एक छोटी सी फ़ौज लेकर तओउस पे हमला कर दिया। इस में दोनों जांबाज़ जस्त और जबान मारे गए। फ़ौज में भगदड़ मच गई और आला हज तओउस की जंग में हार गए। हज़रत उमर ने फौरी तौर पर हज़रत साब बिन अबी व्यास को हुकुम दिया के आला हज की मदद करो आप ने १२००० का लश्कर जनाब अबी सबरी बिन अबी हस्म को सरदार बना कर भेजा इन लोगो ने दुबारा हमला करा और तमाम कैद मुसलमानों को आज़ाद करवाया और ताउस की जंग जीत ली।

(कौल-ए-रसूल (स.अ))

एक शक्स ने हज के दरमियान एहराम बांधे हुए शुतुर मुर्ग के अन्डो को नुक्सान पहुंचा दिया। उस शक्स को बाद में मालूम हुआ के एहराम की हालत में ये सब करना ममनून है तो इस ने रसूल (स.अ) के पास जाकर दरियाफ्त किया के मुझे इस का क्या कफ्फारा देना होगा। अब आपने फ़रमाया के तुम शुतुर मुर्ग के उतने ही अंडे जितने तुमने खराब किए थे उनको खरीद कर लाओ और उसी जगह पर रख दो। उससे जो बच्चे निकलेंगे तो वह तुम्हारा कफ्फारा अदा हो जाएगा। इस शक्स ने पुछा हो सकता है सब अन्डो में से बच्चे न निकले तो आप ने फ़रमाया ये ज़रूरी नहीं की जो अंडे तुम से खराब हुए है उन सब में ही बच्चे होते। लिहाज़ा इस बात से तुम्हे कोई फर्क नहीं पडेगा।

(जंग-ए-नेहा वन्द)

इरानी फ़ौज के तमाम बड़े बड़े सरदार जैसे फिर्जान, अबान जादू, और किरमान मरूब शजान।

यर-जुल-जल इस जंग की रहनुमाई कर रहा था इस ने एक बड़ा आतिश कड़ा बनवाया और रहने लगा तक़रीबन १,५०,००० का लश्कर और साथ में सैकड़ो हाथी लेकर इस्लामी फ़ौज के सामने डट गया। इस्लामी फ़ौज की तरफ से जनाब नौमान की सरदारी में ३००० का लश्कर और अब्दुल्लाह बिन उमर के साथ ५००० का लश्कर बसरा और कुफा में खड़ा था और पहाड़ कोहे अरजान पर जनाब ज़रीन अब्दुल्लाह बिजली, मुंगीरा बिन शीबा, तल्हा उमर बिन यसरब यह लोग तक़रीबन ७०,००० से ८०,००० का लश्कर लेकर हमले के लिए आगे बढ़े। इस हमले में फिर्जान मर गया। फौजे और आगे बढ़ी इसी दरमियान किरमान, मरोउब, यर-जुल-जल, मुस-सच, यह सभी लोग तुर्किस्तान भाग गए। फौजों को काफी फ़ायदा हुआ इस्लामी फौजों के हाथ दो बड़े संदूक लगे जिसमे सोना और

चांदी भरे हुए थे। तक़रीबन ८०,००० दीनार के हीरे जवाहरात थे नकद के तौर पर ८००० दीनार नकद मिले। कुल रकम ३००० करोड़ दिरहम थी। इस जंग में १,४०,००० इरानी मरे गए।

फ़तेह खुरासान (१८ हिजरी)

जंग-ए-नेहरवान हार जाने के बाद यर-जुल-जल बहुत परेशान था और वह चाहता था कोई ऐसा सरदार हमारी मदद करे ताकि इस्लामी फौजों से बदला लिया जासके एक कहावत है के अँधा क्या मांगे जवाब २ आंखे, एक और कहावत है डूबते को तिनके का सहारा बिलकुल यह दोनों कहावते यर-जुल-जल को सही मालूम पड़ती है क्युकी इस वक्त खाकान तुर्क ने कहा हम तुम्हारा साथ देने के लिए तय्यार हैं ५०,००० लश्कर के साथ इस लश्कर ने खुरासान पर हमला करदिया।

मुसलमानों की तरफ से बसरा शहर से एहनीफ बिन किस अपना लश्कर ले कर निकले और हारिस बिन हसना को मुस-सच शहर भेजा गया और हुक्म मिला हज़रत उमर से खन्दक खोद दो और वही पर स्के रहो इस तरह खुरासान को तीनो तरफ से घेर कर हमला करदिया इसके अलावा हज़रत उमर ने एक फरमान जरी किया के एक बड़ी फ़ौज जमा करके बचे हुए शहरो और कस्बो पर हमला करदो इन फौजों ने बड़ी तादाद में मार काट किए जिस वजह से इन लोगो में तलातुन मच गया और पूरे खुरासान पर फ़तेह हासिल हो गई।

जिस ताउन की बीमारी से तमाम सहाबाओ और दीगर लोगो को वफात मिली थी यानी मुल्के शाम में अब यहाँ के हालात मामूल थे इस लिए हज़रत उमर ने शाम का दौरा किया।

जब उमरू बिन आस की मुलाकात हज़रत उमर से हुई तो उमरू ने हज़रत उमर को खुश देख कर कहा मैं चाहता हूँ की क्यों न अब मिस्र पर भी हमला करदिया जाए. काफी ना-ना करने के बाद ४००० का लश्कर उमरू आस लेकर, मिस्र पहुंच गया लेकिन इसी दरमियान हज़रत उमर ने खादिम के ज़रिए उमरू आस को एक ख़त भेजा

जिस में यह लिखा था तुम अभी हमला ना करना हम इसके लिए इस्तेखारा देखेंगे फिर फैसला करेंगे लेकिन जब हज़रत ने इस्तेखारा देखा तो उसमे मना आ गया तो आपने कासिद के ज़रिए जंग को बंद करने का हुकुम भेज दिया क्युकी इस्तेखारा में मना आ गई थी, लेकिन बड़ी चालाकी से ख़त के मज़मून को बदल दिया गया और उमरू आस ने मिस्र को घेर लिया इस वक्त मिस्र का गवर्नर मकुकस था और मिस्र का बादशाह हर्कुल था यानी हर्कुल की हुकूमत थी पूरे मिस्र का कण्ट्रोल रूम शहर उस्तून-तुनिया था। मिस्र में दो गिरजा घर बहुत बड़े थे एक का नाम याकूबी और दुसरे का नाम यूनानी था। एक बढ़िया जंग लड़ी गई और इस जंग में एक बहुत बड़ा किला था जिसका नाम किला बिलबिस था। उमरू आस ने इस किले को फ़तेह करलिया और बेटी बिलबिस को इज्ज़त के साथ मकुकस के पास रवाना कर दिया गया उसके बाद उमरू आस आगे बढे और बाबुल किला भी फ़तेह कर लिया और एक सहाबी जिनका नाम ऐनुल शम्श उन्हों ने छोटा किला भी फ़तेह करलिया। इधर उमरू आस ने हज़रत उमर को खबर भेजी के अबतक हमने ३ किले फ़तेह कर लिए है हमे और फ़ौज चाहिए तब हज़रत उमर ने एक ४००० का लश्कर मदीने से और भेजा तकरीबन ६ महीने गुजर गए लेकिन फ़तेह हासिल नहीं हुई इस इसलिए हज़रत उमर ने ज़ुबैर बिन आबान को **४०००** के लश्कर के साथ भेजा जनाब ज़ुबैर ने किले का अच्छी तरह से मुआइना किया और **१००** लोगो की टुकड़ी ले कर किले पर धाबा बोल दिया और बाकि लोगो को और बाकी लोगो की कमर पर रस्सी बंधकर रस्सियो को किले में फंसा दिया और पीछे की तरफ से अल्लाहु अकबर कहते हुए किले में दाखिल हो गए ज़ुबैर ने किले का दरवाज़ा खोल और अन्दर दाखिल हो गए लेकिन गवर्नर मकुकस भाग निकला और कुछ दिनों बाद मकुकस ने समझौता कर लिया, समझौता इस तरह हुआ।

१) जब भी कोई मुसलमान इरानियो के घर जाएगा तो उसे उसकी मेहमान नवाजी में ३ दिन तक दावत और २ दिरहम देने होंगे।

२) सबको जज़िया देना होगा।

३) जो लोग जज़िया नहीं दे सकते यानी वह उसके लायक नहीं तो उन्हें हर्कुल की मोहर लगा दस्तावेज़ देना होगा।

इस तरह समझौता पूरा हुआ और ६० लाख किब्ती जज़िया देने के लिए तैयार हो गए। लेकिन कुछ दिनों बाद मक़ुकस ने समझौते को तोड़ दिया जिसका असर यह हुए के उमरू आस ने मक़ुकस को ख़त्म करने का इरादा कर लिया। मक़ुकस अपनी फौजों को लेकर आगे भागता रहा और उमरू आस उसके पीछे लगे रहे इस तरह फिर एक जंग शुरू हो गई। लगातार २१ महीने तक जंग चली और आखिर बरोज़ **जुमा मुहर्रम की १५, २० हिजरी** दुनिया के मुताबिक **२२ दिसम्बर ६४० इसवी** को इस्लामी फौजों ने पुरे तरीके से मिस्र को अपने कब्ज़े में कर लिया। आ सिकंद्रिया क्युकी एक बहुत आलीशान महल था और काफी माल था इसके आलावा आबान में ४००० आलिशान महल ४०० हम्माम, ४००० शेर बाग़, १२००० सजी हुई दुकाने और १०० से ज्यादा जहाजी बेडे मुसलमानो को मिल गए|

बादशाह सिकंदर के बाद यह दुनिया की सबसे बड़ी फ़तेह थी इसलिए हज़रत उमर को सानिये सिकंदर का खिताब मिला यह हज़रत उमर की आखरी जंग थी।

अब हज़रत उमर ने अपने जांबाज़ दोस्तों को उनके रुतबे की मुताबिक उन्हें औधे देने शुरू करदिये जिसके तहत आपने हज़रत उमरू आस को मिस्र का गवर्नर मुक़र्रर किया। मिस्र के अन्दर एक आलिम जिसका नाम याहुदा जहाबी उर्फ़ (जॉन गरिमान) उमरू आस का दोस्त बन गया एक बार उमरू आस ने अपने दोस्त को पुछा यहाँ पर कुंडी चीज़ है या कौनसा खज़ाना है जो अभी तक मेरी आँखों से छुपा हुआ है तब इस आलिम ने बताया मैं एक खज़ाना जानता हूँ लेकिन इसके बदले में मुझे क़ुतुब खाना आसिकंद्रिया जो के बुक्वैंद शहर में चाहिए अब इसकी खोज शुरू हुई जिसकी शुरुआत बलातिमस ने की यह एक बहुत बड़ा क़ुतुब खाना था दुनिया में इतना बड़ा क़ुतुब खाना कहीं ना था इस क़ुतुब खाने के अन्दर ९ लाख से ज्यादा इल्मी और जादुई किताबे मैजूद थी इसके आलावा तमाम नबियों के सहिफे और किस्से भी मौजूद थे।

हज़रत उमरू आस ने इसकी खबर और तफसील हज़रत उमर को बताई तो आपने कहा हमारे पास आसमानी किताब यानि क़ुरआन मौजूद है और हमारे रसूल (स.अ) कि हदीसे भी मौजूद है, इसलिए हमे इनकी ज़रूरत नहीं

है। इसलिए इस क़ुतुब खाने को आग के हवाले कर दिया जाए चुनांचे उमरू आस ने एक किताब जो के इल्म से भरी थी अपने पास रख दिया बकिया किताबों को जला दिया गया।

रोम ने एक बार फिर २२ हिजरी में हमला किया लेकिन उन्हें इसमें कामयाबी नहीं हासिल हुई। हज़रत उमर ने अपनी ज़िन्दगी में एक रजिस्टर बनवाया जिसका नाम रखा दीवान-ए-अत्ता। यह काम आपने १५ हिजरी में एक कमिटी बनाई इस कमिटी के आलिम ३ लोग थे उनके नाम इस तरह है।

१) अकील बिन अबू तालिब

२) ज़ुबैर बिन अवाम

३) मुअज-जम बिन नौफील

इन तीनो सहाबाओ ने जो शरियत बनाई वह इस तरह थी।

---

१) जनाब अब्बास बिन अब्दुल मुताल्लिब को १२,००० दिरहम सालाना दिए जायेंगे।

२) हज़रत आएशा सिद्दीका को भी १२,००० दिरहम दिए जायेंगे।

३) दीगर औज्वाज़े पैगम्बर को १०,००० दिरहम सालाना दिए जायेंगे।

४) साहबे बदर को ५,००० दिरहम सालाना दिए जायेंगे।

५) एहले बदर की बीवियों को ५०० दिरहम सालाना दिए जायेंगे।

६) साहबे उबैदिया को ४,००० दिरहम सालाना दिए जायेंगे।

७) एहले उबैदिया की बीवियों को ५०० दिरहम सालाना दिए जायेंगे।

८) मुहाजिरीन हब्सा को **४,०००** दिरहम सालाना दिए जायेंगे।

९) मुहाजिरीन कल्बे फ़तेह मक्का को **३,०००** दिरहम सालाना दिए जायेंगे।

१०) शुरू की जंगे कद्दासिया को **२,०००** दिरहम सालाना दिए जायेंगे।

११) एहले कद्दासिया की बीवियों को **२००** दिरहम सालाना दिए जायेंगे।

१२) कद्दासिया और यम्मूत कद-दासिय और यम्मूत के बाद के मुजाहिरीन को **१०००** दिरहम दिए जायेंगे।

१३) मसना की फ़ौज को **५००** दिरहम सालाना दिए जायेंगे।

१४) यमन की फ़ौज को **४००** दिरहम सालाना दिए जायेंगे।

१५) लित्त की फ़ौज को **३००** दिरहम सालाना दिए जायेंगे।

१६) रबी की फ़ौज को **२५०** दिरहम सालाना दिए जायेंगे।

१७) लावारिस औरतो, बच्चो और मर्दों को **१५०** दिरहम सालाना दिए जायेंगे।

(हज़रत उमर के इन्तेज़ामात)

१) खेती वाली ज़मीनों में नहरे खुदवाई गई।

२) नई नई सड़के बनवाई गई।

३) हर मील के फासले पर रैन बसेरा बनवाया गया और पानी के लिए कुवा खुदवाया गया।

४) किसानो को खेती के लिए ज़मीन दी गई इसपर उगने वाली फसल का आधा हिस्सा बैतुल माल में जमा करने का हुकुम था।

५) काश्त कारो को बैतुल माल से मदद दी जाती थी और दुकाने वगैरह भी दी गई।

६) माले गनीमत का **२०%** या पांचवा हिस्सा बैतुल माल में दिया जाता था बकिया **८०%** फौजों में तकसीम करने का हुकुम था।

७) जिन किसानो की खुद की ज़मीने थी उस पर **१०%** टैक्स था।

८) जो लोग दुसरे मुल्को से आकर अपना कारोबार करते थे उन्हें **१०%** टैक्स अदा करना होता था।

९) बिना हुकूमत के इज़ाज़त ज़मीन खरीदना और बेचना मना हो गई थी।

१०) बिना हुकूमत के इज़ाज़त ज़मीन खरीदने और बेचने पर **१०%** टैक्स लगाया था।

११) आप हज़रत ने नई कैद खाने की तामीर की।

१२) दुर्रे (कोढो) की सजा आपने मुक़र्रर की। आपने फ़रमाया झूटी गवाही देने पर **८०** कोढे और जीना कारी करने पर **८०** कोढे और औरत को शर्म सार करदिया जाए।

१३) शाराब पिने वालो पर **८०** कोढे।

१४) चोरी करने पर हाथ काटने का फरमान।

१५) किसी सरकारी मुलाजिम को रिशवत खोरी पर तमाम जायदाद ज़प्त और ज़िला वतन करने का हुकुम।

१६) जितने भी बड़े बड़े शहर जैसे बसरा, कुफा, मदीना, खुरासान, स्मला, एल्विया, फिलिस्तीन और दीगर शहरो में एक-एक गवर्नर (आमिल, वाल, मुंशी) मुक़र्रर करवाया। पैसा वसूल करने के लिए कलेक्टर (सहेबुल

खिराज), एक पुलिस ऑफिसर (साहिबे एह्दास), एक खजानची (सहेबुल माल), एक फौजी ऑफिसर (कायेद) और हर शहर में **४००-४००** फौजी घोड़े और उनके अस्तबल-ए फ़ौज के लिए बैरक और फौजियों के लिए मकानात और सरहदों पर फ़ौज हर वक्त तैनात।

(हज़रत उमर के दौर में तबदीलियाँ)

१) नमाज़े जनाज़ा में ५ की जगह ४ तकबिरें कहना।

२) मुताह को हराम करार दिया।

३) नमाज़ के वक्त हाथ बंधने का हुकुम दिया (१७ हिजरी में)।

४) तराविह की शुरूआत आपने ही करवाई।

५) वाजिब नमाज़ों के आलावा सुन्नत और नफिल नमाज़ो को मस्जिद में अदा करने का हुकुम दिया।

६) जब तक मुकम्मल हुकूमत नहीं थी तो क़ाज़ी फैसले किया करते थे। आपने तमाम लोगो के फत्वे को बंद करा दिया इसकी जगह कई फ़ाज़िल आलिमो की कमिटी बनाई और उन्हें उनका निगेहबान बनाया।

(हज़रत उमर पर हमला)

हज़रत उमर को अबू लोलो बिन फ़िरोज़ ने धोके से बुलाकर **२६** जिल्हिज़ **२३** हिजरी को ज़ख़्मी कर दिया तमाम हाकिमो ने आपका इलाज किया लेकिन कोई भी दवा कारगर साबित नहीं हो रही थी और आपकी तबियत दिन-ब-दिन बिगडती जा रही थी। क्युकी जो खंजर आपके जिस्म में पेवस्त हुई वह ज़हर से भरी हुई थी।

आपकी हालत देखकर सहाबियों ने आप से फ़रमाया के आप किसी को खलीफा मुक़र्रर कर दें एक सहाबी ने आपके कान में कहा के आप अपने फ़रज़न्द जनाब अब्दुल्लाह बिन उमर को खलीफा बना दें, लेकिन आपने मना करदिया और कहा मैं ऐसे को बनाऊ जिसको अपनी बीवी को तलाक तक नहीं देना आता। इस तरह बिना खलीफा मुक़र्रर किए हुए आप हज़रत की वफात **१ मुहर्रम २४ हिजरी** को हो गई।

अब सारा दारो मदार खलीफा चुनने का हज़रत आएशा सिद्दीका पर था आप ने सहाबाओ को इकट्ठा किया और कहा की आप लोग किसी को भी खलीफा आपसी रजामंदी पर चुन लीजिये। अब आपसी रजामंदी से ६ नाम सामने आए जो इस तरह थे।

१) ज़ुबैर बिन आवाम।

२) अब्दुल रहमान बिन औफ्फ़।

३) तल्हा बिन ख्वालैद।

४) साद बिन अबी व्यास।

५) हज़रत उस्मान।

६) हज़रत अली।

३ मुहर्रम २४ हिजरी को यह सभी सहाबा हज़रत आयेश के हुजरे में जमा हुए और इन लोगो ने अपनी अपनी राय राखी जो इस तरहा थी।

१) तल्हा बिन ख्वालैद ने कहा मैं हज़रत उस्मान के हक में राइ देता हूँ।

२) हज़रत ज़ुबैर ने कहा मैं हज़रत अली को खलीफा देखना चाहता हूँ।

३) साद बिन अबी व्यास अब्दुल रहमान के हक में अपनी बात राखी।

अब्दुल रहमान ने एक दिमागी चाल चली और कहा या तो अली और उस्मान दोनों मुझे यह हक़ दे दें के मैं आप दोनों में से एक को खलीफा चुनु या फिर आप दोनों में से एक अपने को दस्तबरदार (अलग) कर लें।

दोनों सहाबी अली और उस्मान ने इनकार करदिया अब अब्दुल रहमान ने कहा की मैं हज़रत अली पर बैत के लिए तैयार हूँ लेकिन आपको एक कसम खानी पड़ेगी की आप किताबे खुदा (कुरआन) सुन्नत-ए रसूल और सीरते शैखीन पर अमल करे हज़रत अली ने कहा के मैं शैखीन पर अमल नहीं करूँगा।

तब हज़रत उस्मान ने इन तीनो पर अमल करने का वादा किया, इस लिए मज़हबे इस्लाम का तीसरा सबसे बड़ा खलीफा हज़रत उस्मान को बनाया गया। इस तरहा **३ मुहर्रम २४ हिजरी** को खिलाफत बनी हाशिम के हाथों से निकलकर बही उमय्या के हातो में चली गई। तीसरे खलीफा का पूरा नाम **हज़रत उस्मान बिन अफ्फान** था। आपका लकब **गनी** था और बनी उमय्या का लकब **ज़ुल्नुरैन** जिसका मतलब होता है सीधा और इमानदार.

आपके बाप का नाम अफ्फान बिन अब्दुल आस बिन उमय्या बिन अब्दुल शम्स माँ का नाम अर्दी बिन्ते करीज़ बिन राबिया। आपकी ८ जौज़ायें और १६ बच्चे थे आपकी बीवियों के नाम इस तरहा थे।

१) रुकय्या बिन्ते आला आपसे १ औलाद हुई जिसका नाम था अब्दुल्लाह।

२) कुलसुम बिन्ते आला इनसे कोई औलाद नहीं हुई. यह दोनों जौज़ायें रसूल-ए-करीम की साली जनाबे आला की बेटियां थी इनके वालिदैन का इन्तेकाल हो गया था। इस लिए रसूल की पहली ज़ौजा खातिज़तुल कुबरा ने अपने पास इनकी परवरिश की और रसूल ने इन्हें अपनी बेटी माना और इनका निकाह कर दिया।

३) फाकता बिन्ते गजवान आप से एक बेटा हुआ इनका नाम भी अब्दुल्लाह था।

४) उम्मे उमर बिन्ते जानी गुब्ब आपसे चार बेटे हुए और एक बेटी। उम्रो, खालिद, आबान, उमर और बेटी मरियम।

५) फ़ात्मा बिन्ते वलीद बिन मुग्गीरा आपसे दो बेटे और एक बेटी पैदा हुई इनके नाम थे वलीद, सईद एक बेटी उम्मे सईद।

६) मलिका बिन्ते अकबा आपसे एक बेटा हुआ अब्दुल्लाह मुल्क।

७) रमला बिन्ते शीबा आपसे २ बेटियां हुई नाम आएशा, उम्मे आबान।

८) नाहिला बिन्ते फरहा-फज़ा कल्बिया आपसे दो बेटे और एक बेटी हुई नाम उम्मे खालिद उम्मे आबान और बेटी सुगरा।

हज़रत उस्मान (रज़िअल्लाह ताला अन्हु), रसूल-ए-करीम (सल-लल्ला-हु-अलैहे-वसल्लम) से ४ साल छोटे थे रंग गोरा कद लम्बा नूरानी दाढ़ी और हैसियत दार थे। एक बार रसूल (सल-लल्ला-हु-अलैहे-वसल्लम) ने यह ऐलान किया के एक शक्स बनी उमय्या का खलीफा बनेगा और इसकी निशानी यह होगी के उसकी नाक से खून निकलेगा और यह वाकिया हज़रत के खलीफा बन्नेके १३ महीने बाद पेश आया। एक मशहूर आलिम जिनका नाम था अल्लामा सलाउद्दीन शेतवा आपने अपनी किताब (तारीख़ुल-खुलेया) में नकसीर फूटने का वाकिया बयान किया है। हज़रत उस्मान गनी के वक्त खुसूसन ३ तरह के कबीले थे।

१) **कबीला-ए-बनिताबी-तबी** इस कबीले से जनाब अबुबकर रज़िअल्लाह ताला अन्हु आए।

२) **कबीला-ए-बनी आदि** इस कबीले से हज़रत उमर रज़िअल्लाह ताला अन्हु आए।

३) **कबीला-ए-बनी उमय्या** इस कबीले का ताअल्लुक हज़रत उस्मान गनी रज़िअल्लाह ताला अन्हु से था।

हज़रत उस्मान गनी की हुकूमत में वहाँ के अंसारो ने आप से वजारत की मांग की। लेकिन आपने उनकी मांगो को ना मंज़ूर करदिया। आप हज़रत उस्मान ने तमाम ऐसे फैसले किए गलत किए। जिसकी वजह से आप और दुसरे लोगो के बीच दुश्मनी बढ गई खुसूसन आपने जो गलत फैसले किए वह इस तरह थे।

१) आपने दीवाने अत्ता में जो सालाना रकम हज़रत आएशा सिद्दीका को दी जाती थी उसको **१२,०००** दिरहम से हटाकर **१०,०००** करदिया इस तरह हज़रत आएशा सिद्दीका की बरतरी ख़त्म कर दी गई जिस से उम्मुल मोमिनीन हज़रत उस्मान से नाराज़ हो गए।

२) हज़रत अब्दुल्लाह की दायत (जुर्माना) अदा करके उसको आजाद करवाया इस वजह से मुहाजिरीन अंसार खिलाफ हो गए।

३) आपने फिलिस्तीन, हबस, हमूस इन तीनो शेहरो को दमिश्क में मिला दिया और यहाँ की गवर्नरी हज़रत माविया जो की बनी उमय्या के खानदान में से थे दे दी।

४) बैतुल माल में से लाखो दिरहम लोगो को तकसीम कर दिए गए जो की बनी उमय्या के कबीले के थे।

५) आपने वलीद बिन अक्बा को वापस बुला लिया जबकि अल्लाह के **रसूल (स.अ) ने मदीने के बाहर रब्जा शहर में कहा था जो कोई भी वलीद बिन अक्बा का क़त्ल करेगा तो वह जन्नत पायेगा।** मतलब यह हुआ के हज़रत उस्मान ने रसूल (स.अ) के कौल की मुखालिफत की, सिर्फ इस लिए कि वलीद बिन अक्बा हज़रत उस्मान का सौतेला भाई था।

६) मुग्गीरा बिन शीबा को कूफा की गवर्नरी से हटाया और साद बिन अबी व्यास को बना दिया, लेकिन कुछ वक्फे के बाद साद बिन अबी व्यास को गवर्नर के ओहदे से इस लिए हटाया गया क्युकी अब्दुल्लाह बिन मसूद ने जो की साहिबे माल थे उन्हों ने हज़रत उस्मान से शिकायत की। साद बिन अबी व्यास बैतुल माल से क़र्ज़ लिया है और अबतक अदा नहीं किया है इसी वजह से हटाकर वलीद बिन अक्बा को कूफे का गवर्नर बना दिया।

तमाम किताबों में वलीद को शराबी कहा गया है और यह भी कहा गया है की यह शराब की हालत में ही नमाज़ पढलेते थे और एक बार एक रकात ज्यादा पढ दी आपकी इसी हरकत को साबित करने के लिए २ सहाबी अबू ज़र और अबू ज़ैनब ने एक बार वलीद बिन अक्बा जब सजदे में गए तो सो गए आप दोनों ने बतौर सबूत उनकी अंगूठी उतार ली और हज़रत उस्मान को दिखाई लेकिन आप ने इस शिकायत पर कोई कारवाही नहीं की। फिर दोनों

सहाबियों ने इसकी शिकायत हज़रत आएशा सिद्दीका से की, जब यह दोनों सहाबी हज़रत आएशा के हुजरे में शिकायत कररहे थे तो हज़रत उस्मान को इस की खबर लग गई। इस पर आपस में कुछ बहस भी हुई और ख़ामोशी छा गई और कुछ दिनों बाद पत्थराव भी हुआ यह सहाबाए कराम के खिलाफत के दौर में पहली बार ऐसा वाकिया पेश आया।

वलीद बिन अक्बा एक बेहतरीन शायर था और एक सहाबी जिन का नाम अबू जाविद था दोनों में अच्छी मुलाकाते हुई और इस ने वलीद की मुलाकात जुनैद बिन काद अज्वी से करवाई इन्हें यामा के नाम से जाना जाता था। इन की अच्छी मुलाकात दरोगा ज़िन्दान से थी इसके ज़रिए आपने एक सहाबी जिनका नाम मेहमून गुलाम था। इन्हें कैद करवा दिया गया क्युकी यह लोग इन की कमजोरियों को सामने लाते थे। एक और सहाबी जिनका नाम अब्दुल्लाह बिन मसूद था इनको भी कैद कर करवा दिया। इन की वफात **२८** सफ़र **३२** हिजरी को हो गई।

(अबूज़र गफ्फारी)

यह काफी बुज़ुर्ग सहाबी थे और पहले शक्स थे जिन्होंने शहर बाबुल में आवाज़ के साथ तिलावत की थी आपका (नबी-ए-करीम (स.अ))यह कीमती हीरा जो की हज़रत उस्मान के पास था आपने यह हीरा किसी और को दे दिया आप (गफ्फारी) की वफात जिल्हिज़ **३२** हिजरी में हुई.

हज़रत उस्मान ने अपनी बेटी आएशा की शादी हारिस बिन हाकम से की और तोहफा के तौर पर **१,००,०००** दिरहम दिए। इसके अलावा रसूल-ए-करीम (स.अ) की वफात की जगह जिसका नाम बहुजर था वह भी तोहफे के तौर पर देदी.

अबू सुफियान बिन हरब जो की आप के ही खानदान के थे इनको भी **२,००,०००** दिरहम दिए गए इसके अलावा अब्दुल्लाह बिन खालिद यह भी आपके ही खानदान के थे इन को भी **४,००,०००** दिरहम बतौर तोहफा दिए गए।

ज़ैद बिन साबित जो की इन के ही खानदान के थे और इनके खाला के बेटे थे यह साहिबे-माल थे। बचा हुआ रूपया पैसा जो तक़रीबन ४.२५ करोड़ था इनके हवाले कर दिया गया। बसरा के गवर्नर अबू मूसा अशरी को हटाकर अब्दुल रहमान बिन आमिर को बसरा की गवर्नरी देदी इस की शिकायत मूसा ने हज़रत आएशा सिद्दीका से की।

मिस्र के गवर्नर उमरू आस को हटा कर अब्दुल्लाह बिन साद को बनाया और उमरू आस को गवर्नर-ए-खिराज बनाया और कुछ वक्त बाद उमरू आस को खिराज की गवर्नरी से भी हटा दिया गया और फौजी करवाई के लिए ज़िम्मेदारी सौंप दी यह वाकिया २८ हिजरी का है। इस तरह तमाम लोग आपके खिलाफ हो गए।

अब्दुल्लाह बिन साद ने काफी ज़ुल्म किए। लोगो ने आपकी शिकायत भी मदीने भेजी जिसमें इराकी अवाम का एक बड़ा हिस्सा था लेकिन इस पर भी कोई कारवाई नहीं की गई और इराक की अवाम ने मदीने पहुंच कर हज़रत उस्मान पर हमला कर दिया, जिससे आप ज़ख़्मी हो गए।

हज़रत उस्मान ने जब हालात इस तरह देखे तो उन्होंने हज़रत अली से मशवरा किया के क्या किया जाए। तब हज़रत अली ने आप को राय दी के अब्दुल्लाह बिन साद को वहां से हटा दिया जाए और उनकी जगह मुहम्मद बिन अबुबकर को गवर्नर बनाया जाए। इस तरह मिस्र पर दुबारा कब्ज़ा मिल गया। मरवान ने फिर एक चाल चली हज़रत उस्मान से कहा आप दोबारा मस्जिद में ख़ुत्बा दें और यह कहें के मिस्र वालों को गलत फ़हमी हो गई है। लेकिन हज़रत उस्मान के उस खुतबे को किसी ने यकीन में नहीं लिया। जब मरवान ने देखा काफी हाय-तौबा हो रही है तो मरवान ने बाहर आकर उलटी बातें करी। जिसका अंजाम यह हुए के बाहर का हुजूम जोकि बड़ा बेचैन था वह आपे से बाहर हो गया। अब यह मजमा हज़रत अली के पास पहुंचा और उनसे मिला और तमाम मुश्किल हालातो पर बहस और मशवरा किया, अब हज़रत अली ने हज़रत उस्मान से मुलाकात की और उन्हें समझाया इस तरहा हज़रत अली के कहने पर फिलहाल यह मामला टल गया।

३२ हिजरी में हज़रत उस्मान ने **अम्मार बिन यासिर** को मदीने से बाहर जाने का हुकुम दे दिया। इस वजह से **कबिलाए मकदूम** हज़रत उस्मान के खिलाफ हो गया और इस की शिकायत हज़रत अली से की इसलिए हज़रत अली ने हज़रत उस्मान को समझाने की कोशिश की लेकिन हज़रत उस्मान खफा हो गए और हज़रत अली से कहा हम आप को भी मदीने के बाहर निकाल देंगे। यह सुनते ही हज़रत अली तैश में आगए और तलवार निकाल ली।

मरवान ने हज़रत उस्मान के खिलाफ एक लम्बी जमात खड़ी करदी और यह सभी लोग मरवान के बहकाने पर ही खिलाफ थे। उन में से हज़रत तल्हा, हज़रत ज़ुबैर बिन अवाम, बनी तमीम (कबीला), कबिलाए बनी आदि, हज़रत गफ्फार, हज़रत आएशा, पूरा मिस्र और बनी हाशिम।

(हज़रत उस्मान के ज़रिए की गई तब्दीलिया)

१) **२६** हिजरी में खाना-ए-काबा की जगह को बढ़ा दिया गया और पहले से ज्यादा खूबसूरत बनाया।

२) **२९** हिजरी में मस्जिद-ए-नबवी की तौफीक करवाई यानि इस का इलाका **१६०** गज़ लम्बा और **१५०** गज़ चौड़ा और कई सुतून भी बनवाए और उनपर खूबसूरत नक्षी करवाई।

३) **३२** हिजरी में पानी की किल्लत को ख़त्म करवाया।

४) कुर्बानी के जानवरों पर लिया जाने वाला टैक्स ख़त्म करवा दिय गया।

५) अच्छी और मज़बूत सड़के की तामीर कारवाई और रैन बसेरे का अच्छा इंतज़ाम करवाया।

६) फ़ौज को दुस्त किया।

७) पेड़ वगैरह लगवाए।

८) फौजों की ट्रेनिंग का इंतज़ाम किया।

(जमा-ए-कुरआन)

इसकी शुरूआत अव्वल खलीफा हज़रत अबू बकर के वक्त में हो चुकी थी। हज़रत ने **ज़ैद बिन साबित** को इस काम की ज़िम्मेदारी सौंपी थी, की सारी सूरेह को जमा करो। **लेकिन इस काम को अंजाम दिया अब्दुल्लाह बिन उमर, हज़रत अली, अब्दुल्लाह बिन मसूद, अबू अय्यूब अंसारी, अब्दुल्लाह बिन मसूद इन हज़रत के पास पूरा कुरआन लिखा गया।** यह कुरआन **खती-कुफ्फी** ज़बान में लिखा गया और हज़रत अबुबकर के पास जमा किया गया। लेकिन जब हज़रत अबू बकर की वफात हो गई। तो हज़रत अफसा के पास इस कुरआन को महफूज़ कर दिया गया। तमाम जंगे लड़ने के बाद लोगो ने इस कुरआन को अपनी अपनी ज़ुबान में पढना शुरू किया। जो के अलग अलग फिरको की थी। इसलिए **२९ हिजरी** में **हज़रत उस्मान** ने एक मुकम्मल कुरआन के लिए ४ आलिमो की एक कमिटी बनाई। जिसके नाम इस तरहा थे।

१) ज़ैद बिन साबित।

२) अब्दुल्लाह बिन ज़ाबिर।

३) सईद बिन इल्यास।

४) अब्दुल्लाह बिन हारिस।

इन चारो आलिमो ने अपनी रिपोर्ट में कहा की कुरआन को कुरैश की किरात पर पढा जाए। इसलिए तमाम आयातों की बारीकी से तफ्तीश हुई और २ साल के वक्फे में कुरआन के ७ नुक्से तैयार किए और तमाम बड़े बड़े

शेहरो में इनकी कॉपियाँ भेजी गई। के अब इसकी नक़ल करो और गवर्नर के पास मेहफूज रखो। इस तरहा **२९** हिजरी में कुरआन तरतीब के साथ मुकम्मल किया गया।

हज़रत अली ने भी जमा कुरआन सौंपा था लेकिन उस वक्त अबू बकर ने इनकार करदिया था। हज़रत अली के कुरआन में पारो की तादाद ४० राखी गई थी। जिसमे १० पारे एहले-बैत के बारे में थे।

(मीना की नमाज़ में तब्दीलियाँ)

हज़रत उस्मान मदीने से चलकर मीना पहुंचे और उन्होंने वहां पर यानी मीना में नमाज़-ए-कसर नहीं पढी। बलके पूरी नमाज़ पढी। फिर आप ने फ़रमाया की हम ने पूरी नमाज़ इस लिए पढी क्योंकी हम अब अमन में है।

एक बार का वाकिया है की जनाब लैला बिन उमय्या ने हज़रत उमर से सवाल किया की अमन और चैन की हालत में कसर की नमाज़ क्यों पढ़े। तो हज़रत उमर ने जवाब दिया की रसूल (स.अ) की हदीस है के कसर नमाज़ सदका-ए-खुदा है। तो कौन ऐसा है के खुदा सदका दे और बन्दा ना ले।

हज़रत उस्मान ने कहा के नमाज़ पढने के दौरान हाथो को बांधा जाए। इस पर सवाल उठा के रसूल (स.अ) के वक्त में हाथ बांधते थे लेकिन बाद में रसूल (स.अ) ने हाथों को खुलवा दिया। इसके जवाब में हज़रत उस्मान ने फ़रमाया के जो गुनेहगार मेरे सामने हाथ बांध कर आते है। तो मुझे अच्छा लगता है तो हम गुनेहगार की हालत में खड़े होते हैं तो खुदा को अच्छा लगता होगा। तो इस हदीस के खिलाफ हज़रत अली ने फ़रमाया के रसूल (स.अ) की हदीस यह है के सफो में खड़े हुए लोग अल्लाह की फ़ौज है और हर नमाज़ी खुदा का सिपाही तो आपने जवाब दिया की दुनिया की कोई भी फ़ौज हाथ बांध कर खाड़ी नहीं होती। हज़रत उस्मान ने जवाब दिया जो मैं बेहतर समझता हूँ वही करता हूँ।

हज़रत उस्मान ने २५ हिजरी में मिस्र के गवर्नर जनाब अब्दुल्लाह बिन साद को हुकुम दिया के आप अफ्रीका की तरफ बढ़े तो जनाब ने कसीर तादाद में फ़ौज लेकर तेवनूस की तरफ बढ़े। इस्लामी फ़ौज में तकरीबन ८०,००० फौजी थे। यहाँ पर रोमियो की तरफ से तकरीबन १,२०,००० की फ़ौज मोर्चा संभाले हुए थी। बड़े पैमाने में जंग शुरू हो गई और तकरीबन ६ महीने तक जंग चलती रही। लेकिन अचानक एक दिन रात के वक्त रोमियो ने इस्लामी फ़ौज पर हमला कर दिया जब की सूरज डूब जाने के बाद जंग करना मना था लेकिन रोमियो ने जंग के उसूल के खिलाफ काम किया लिहाज़ा इस अचानक हुए हमले में इस्लामी फौजों के पाव उखड गए और तेवनूस को छोड़ कर मिस्र वापस आगए। इस जंग में ३०,००० मुसलमान शहीद हो गए और १५०० रोमी भी मारे गए।

२७ हिजरी माहे शवाल में हज़रत उस्मान ने तकरीबन ४०,००० की फ़ौज जिसमे तमाम साहबा थे मिस्र की तरफ रवाना किया यहाँ पर हज़रत उमरू आस को फ़ौज की कमान सौंपी गई और हज़रत १,००,००० की फ़ौज के साथ तेओनुस की तरफ रुख किया जहां पर रोमियो की १,५०,००० की फ़ौज के साथ कड़ा मुकाबला हुआ और खुदा के हुकुम से २ दिन के अन्दर हि रोमियो को हार का मुह देखना पड़ा इस तरह १५ रबी-उल-औव्वल २८ हिजरी में लीबिया फ़तेह हुआ फिर इसी फ़ौज को लेकर उमरू आस अल्जीरिया की तरफ बढ़े और शहर उल-गाला के मुकाम पर रोमियो की ४०,००० फौजियों से मुकाबला हुआ और इस तरह ३ शाबान २८ हिजरी को अल्जीरिया भी फ़तेह हो गया।

उमरू आस की निगरानी में इसीकुज ने मुराक्को पर हमला किया लेकिन यहाँ पर रोमियो ने मुहायदा कर लिया इस तरह ३ जिल्हज २८ हिजरी में मुराक्को फ़तेह हो गया।

(जंग-ए-फ़तेह स्पेन)

मुरक्को जीतने के बाद हज़रत उमरू आस अपनी फ़ौज के साथ कुछ दिन तक यहीं रहे फिर इसके बाद २९ हिजरी माहे मुहर्रम में तमाम फौजों के साथ स्पेन की सरहदों पर अपने झंडे गाड़ दिए यहाँ पर चुप चाप जंग चलती रही और यह सिलसिला ३० हिजरी तक चलता रहा लेकिन **स्पेन** के लोगो ने हज़रत उमरू आस से एक मुहायदा किया और स्पेन फ़तेह हो गया, इसी बीच यानी २९ हिजरी में माविया बिन अबू सुफियान की निगरानी में फौजों ने कबस पर धावा बॉल दिया जहां पर तुर्क की १ लाख की फ़ौज के साथ ३५ हज़ार इस्लामी फ़ौज ने काबस नाम की जगह पर पर जंग लड़ी। इस जंग में इस्लामी फौजों को फ़तेह हासिल हुई। फिर यही फौज माविया बिन अबू सुफियान की निगरानी में इस्तखर नाम के शहर में दाखिल हुई काफी लूट मार करी और इस्तखर को फ़तेह कर लिया कुछ दिन यहीं स्कने के बाद यह पूरी फ़ौज अरजान की तरफ बढ़ी बिना जंग किए हुए ही अरजान फ़तेह हुआ लेकिन इसी दरमियान एक खबर यह आई के खुरासान में बगावत हो गई है तो येही पूरी फ़ौज खुरासान पहुंच गई और बगावत को पूरी तरह से कुचल दिया इस बगावत में २ लाख बागी मरेगाए इसका असर यह हुआ के ३२ हिजरी में अजर बेजान में बगावत हो गई क्युकी अजर बेजान वलीद बिन अकबा के घर आता है इसलिए उसने इस बगावत को बड़ी सख्ती से कुचल दिया और ८ लाख दीनार सालाना खिराज पर मुक़र्रर कर दिया जोकि पहले २ लाख था इस जंग में बहुत बड़ी रकम इस्लामिक फौजों के हाथ लगी इसी दरमियान अब्दुल्लाह बिन साद को स्पेन की गवर्नरी सौंपी गई और बतौर तोहफे १६०० करोड़ दिए गए।

१८ रज्जब ३५ हिजरी में खलफिशार बहुत बढ़ गया जहां जहां गफ्फारी बनी गफ्फार के थे मस्जिद-ए-नबुवी में एक ऊंट के साथ दाखिल हुए उनके पास चादर और बेडी भी थी आप हज़रत उस्मान के सामने पेश हुए और बोले ऐ-उस्मान तू यह बेडी पहन ले और चादर ओढ़ ले और ऊंट पर बैठ जा मैं तुझे दूकान की पहाडियों पर छोड़ दूंगा (यह सूखा पहाड़ था) हज़रत उस्मान तैश में आ गए और हुकुम दिया के गफ्फार को क़त्ल करदिया जाए और कुछ देर के अन्दर जनाब गफ्फार साहब को शहीद करदिया गया। इस हादसे के बाद बनी गफ्फार के कबीले के

लोगो ने बनी उमय्या के घरो को लूटना और आग के हवाले करना शुरू करदिया. काफी जद्दो जेहद के बाद हालात पे काबू पाया गया।

हज़रत तल्हा और हज़रत ज़ुबैर इन् दोनों सहिबोयो ने मिस्र, इराक, इरान के तमाम लोगों को दावत दी के आप सभी हजरात मदीने में जमा हो फिर हालात यहाँ तक पहुंच के दोनों कबीलों के लोगों ने खामोशी इख्तियार करली अब मामला यह बना की या तो तमाम इकट्ठा लोग बनी उमय्या की हुकुमतो को कबूल करे या हज़रत उस्मान खिलाफत छोड़ दे और अगर खिलाफत नहीं छोड़ते तो जंग के लिए तैयार हो जाए हालात को देखते हुए हज़रत अली और साद बिन अबी व्यास ने कनारा कशी और गोशा नशीनी इख्तियार कर ली। इधर हज़रत आएशा सिद्दिक हज पर जाने की तैयारी कर चुकी थी, जब हज़रत उस्मान को यह खबर लगी तो आपने मरवान को भेजा और यह पैगाम भेजा के मदीने के हालात काफी खराब है इस लिए आपका जाना ठीक नहीं है। लेकिन हज़रत आएशा ने इनकार करदिया के मेरी तैयारी हो चुकी है और इन हालात में हम आपके लिए कुछ भी नहीं कर सकते। हज़रत आएशा के मदीने छोड़ने के बाद हज़रत उस्मान का दायरा और छोटा हो गया और हज़रत उस्मान को मस्जिद से घर तक के जाने की छूट थी क्युकी हज़रत तल्हा की निगरानी में बड़ी तादाद में आपका घेराव करलिया था इस घेराव में सभी कबीलों के लोग शरीक थे इसी बीच हज़रत उस्मान ने माविया बिन अबू सुफियान से फौजी मदद मांगी लेकिन वहाँ से कोई मदद नहीं आई और इसका नतीजा यह हुआ के उनके मस्जिद आने पर भी पाबंदी लगादी गई और हज़रत तल्हा ने खुद मस्जिद में नमाज़ पढाना शुरू कर दिया इस घेराव के ४९ दिन यानी **१८ जिलहज ३५ हिजरी** को एक हादसे ने आग में घी का काम किया नैयर बिन अयास ने हज़रत उस्मान के घर के पास आवाज़ लगाईं के बाहर आओ मुझे तुमसे कुछ बात करनी है जब हज़रत उस्मान अपनी घर की छत पर आये तो नैयर ने कहा के तुम अपनी खिलाफत छोड़ दो तो यह तमाम फितना फसाद ख़त्म हो जाएगा लेकिन इसी बीच किसी ने छत से तीर चलाया और नैयर मारे गए अब तो एक बवाल खड़ा हो गया लोगों ने कहा के नैयर के कातिल को हमारे हवाले कर दो मरवान ने जवाब दिया यह मुमकिन नहीं यह सुन्ना था के अवाम ने हज़रत उस्मान के घर में आग लगा दी मरवान और साद बिन अबी व्यास अपने गुलामो के साथ दरवाजे पर आ गए और धक्का

मुक्की शुरू हो गई कुछ लोग हज़रत उस्मान के घर में घुसना चाहते थे लेकिन इन लोगों को बाहर धकेल दिया गया इसी बीच उमरू बिन अंसारी जिनका मकान हज़रत उस्मान के घर से मिला हुआ था उन्हों ने अपने घर का दरवाज़ा खोल दिया और बलवाइयों को अपने घर से हो कर हज़रत उस्मान के घर भेज दिया इस माहोल का फायदा उठाते हुए हज़रत तल्हा ने नकाब पहन ली और बलवाइयों की अगवाही करने लगे।

मुहम्मद बिन अबूबकर ने हज़रत उस्मान को पकड़ लिया और इसी दरमियान कुनान बिन बशीर ने हज़रत उस्मान के ऊपर गुर्ज का वार सर पर करदिया जिससे वह बुरी तरह ज़ख़्मी हो गए इसके बाद सादान बिन हमरान ने तलवार से हज़रत उस्मान पर हमला करदिया इस हमले को रोकने के लिए आपकी जौज़ा जनाब नाएला बीच में आ गई जिससे इनका हाथ कट गया। सादान ने दोबारा हज़रत उस्मान पर ९ वार किए, जिस वजह से हज़रत उस्मान शहीद हो गए हज़रत उस्मान के गुलाम ने सादान को मार दिया फ़ौरन कनवारा बिन वहाब ने उस गुलाम को भी मार दिया फिर एक और गुलाम ने कनवारा को भी मार दिया इस हमले के बाद तमाम बलवाई उमरू बिन अंसारी के घर से होते हुए बाहर निकल गए।

बलवाइयों ने ३ दिन तक हज़रत उस्मान के घर को घेरे रखा और उनकी लाश को दफ़न न होने दिया इसी बीच जाबिर बिन मतीन और हकीम बिन मुकाम हज़रत अली के पास गए और हालात बताए हज़रत अली और साद बिन अबी व्यास ने बलवाइयों को समझा भुजा कर मना लिया और उनकी आल को हज़रत का कफ़न-दफ़न करवाया। बलवाई मान तो गए लेकिन रास्ते में पत्थर लेकर बैठ गए हज़रत उस्मान की दुखतर आएशा, मरवान, और दस गुलामो के साथ जैसे ही लाश बाहर निकली बलवाइयों ने पथराव करना शुरू कर दिया जिससे कई लोग ज़ख़्मी हो गए जल्दी जल्दी में लाश यहूदी और मुसलमानों के बीच की दीवार में दफ़न करदिया गया इस कब्रस्तान का नाम था (हराकोकम)। बाद में माविया बिन अबू सुफियान की हुकूमत में दीवार गिरा दी गई और तमाम मुसलमानों को दफ़न किया जाने लगा इसके बाद इस खित्ते का नाम कब्रस्ताने बनी उमय्या पड़ा।

हज़रत उस्मान की शहादत के बाद मरवान, आएशा, नयेला और कुछ गुलाम उनकी कटी हुई उँगलियाँ और उनका कुरता लेकर मक्के की तरफ से दमिश्क यानी मुल्क-ए-शाम पहुंच गए।

२४ जिल्हिज ३५ हिजरी में एक मजलिसे शुरा का इंतज़ाम हुआ जिसमें मदीने मिस्र मक्का इराक और इरान के नुमाइंदो ने शिरकत की कौन बनेगा नया खलीफा सबके ज़ेहन में एक ही सवाल था के हज़रत उस्मान के बाद इस दौर में कौन खलीफा बनेगा। जनाब तल्हा और ज़ुबैर दो ही इसमें शरीक थे लेकिन किसी भी शक्स ने उनको खलीफा चुनना पसंद नहीं किया क्युके अवाम का एक बड़ा हिस्सा हज़रत अली को खलीफा देखना चाहता था लेकिन इस मजलिस में हज़रत अली मौजूद नहीं थे इस लिए तमाम लोग उनके घर तशरीफ़ लेगए और उनसे इल्तेजा की के खिलाफत की बाग़-डोर अब आप ही संभाले लेकिन हज़रत अली ने इनकार करदिया लेकिन लोग उनसे लगातार इल्तेजा करते रहे यानी मनवाने में लगे रहे बड़ी जद्दो-जेहद के बाद आप ने कहा ठीक है लेकिन मैं इसका ऐलान मस्जिद-ए-नबुवी में ही करूंगा।

सबसे पहले बैत जनाब तल्हा ने की जिनका एक हाथ जंग-ए ओहद में कट गया था लोगों ने कहा खुदा खैर करे इसके बाद मुग्गीरा बिन शीबा, फिर नोमान बिन बशीर, मुस्लिम बिन मुख्विद, मुहम्मद बिन मुस्लिम, साद बिन अबी व्यास, ज़ैद बिन साबित, उसामा बिन ज़ैद, अब्दुल रहमान बिन अबुबकर, अब्दुल्लाह बिन अबुबकर, ने बैत कि लेकिन कबीला-ए-बनी उमय्या ने बैत नही की।

सिर्फ साद बिन अबी व्यास से पुछा गया के आपने बैत क्यों नहीं की तो आपने जवाब दिया पहले सभी लोग बैत करले बाद में मैं करूँगा इसके बाद फिर हज़रत अब्दुल्लाह बिन हज़रत उमर से पुछा गया के तुमने बैत क्यों नहीं की और यह भी कहा के ज़मीन दो फिर भी आपने इंकार करदिया। मलिकाए अश्तर ने हज़रत अली से हुकुम माँगा के क्या मैं इनका सर कलम करदू तब हज़रत अली ने कहा रहनो दो मैं जानता हूँ यह शुरू से ही जिद्दी है. इस तरह हज़रत अली इस्लाम के चौथे खलीफा मुनतखब किए गए **२७** जिल्हिज **३५** हिजरी के दिन तल्हा और ज़ुबैर ने हज़रत अली से कहा के मुझे कूफ़े और बसरे की गवर्नरी चाहिए हज़रत अली ने जवाब दिया के इतना बड़ा फैसला मैं अकेले नहीं कर सकता फिल हाल आप दोनों मेरे साथ ही रहे।

३ मुहर्रम **३६** हिजरी के दिन हज़रत तल्हा और ज़ुबैर ने आकर हज़रत अली से उमरे में जाने की इजाज़त मांगी हज़रत अली ने जवाब दिया के मैं जानता हूँ तुम्हारा इरादा उमरे का नहीं है सिर्फ तुम खलफिशार पैदा करना चाहते

हो लेकिन दोनों जिद पर अड गए हज़रत अली ने दोबारा दोनों से बैत ली और जाने की इज़ाज़त देदी। अपना उमरा करके आएशा सिद्दीका मदीने की तरफ लौट रही थी तो उनकी मुलाकात मरवान, और नाएला से हुई इन् दोनों ने हज़रत आएशा सिद्दीका को मदीने जाने से मना किया और कहा मदीने के हालात बड़े संगीन है वहाँ जाना मुनासिब नहीं है इसी बीच तल्हा और ज़ुबैर भी पहुंच गए और हज़रत आएशा से भी मिले और कहा के हज़रत अली ने तलवार के ज़ोर पर हमसे बैत करवाई है और यह भी कहा के हज़रत अली ने हज़रत उस्मान का क़त्ल करवाया है और सारा इलज़ाम उनके नाम गड दिया।

हज़रत आएशा को यह सब सुनने के बाद बहुत गुस्सा आया इन लोगो ने हज़रत आएशा से यह भी कहा के आप दोबारा मजलिसे शुरा का इन्तेजाम करे और नया खलीफा चुना जाए और यह भी कहा के आप फतवा जारी कर दीजिए के यह बैत गलत हुई है हालात को देखते हुए हज़रत आएशा ने मदीने में रहना ही बेहतर समझा। दमिश्क पहुंचने के बाद मरवान ने माविया बिन अबु सुफ़ियान से कहा आपने हज़रत उस्मान की मदद क्यों नहीं की माविया ने जवाब दिया की मैंने उनके कहने पर फ़ौरन फ़ौज रवाना करदी थी तभी मरवान ने कहा अब कोई मतलब नहीं हज़रत उस्मान शहीद हो चुके थे, माविया को बहुत गुस्सा आया उन्होंने हज़रत उस्मान का खून से लतपत कुरता और कटी हुई उंगलिया दमिश्क की बड़ी मस्जिद में लटका दी और ऐलान किया के हम उस्मान का बदला लेंगे। इसके लिए ७० हज़ार लोग मुक़र्रर किए गए जो की गिरिया किया करते थे।

हज़रत अली की विलादत (१३ रज्जब सन ६०६ ई) मक्का में हुई आपका कद दरमियाना और रंग गेहुआं था रसूल-ए-करीम (सल-लल्ला-हु-अलैहे-वसल्लम) ने आपको पैदाइश के **तीसरे दिन (१५ रज्जब)** को गोद में लिया और अपनी ऊँगली मुबारक मुँह में दी, हज़रत अली ने उसको खूब चूसा और सेहराब हो गए उस दिन आपने दूध नहीं पिया। उस दिन का नाम रसूल ने **यौमुल तरबिया** रखा और कहा इस दिन यानि १५ रज्जब को तक़रीबन १४०० बरस के बाद एक ऐसा शक्स पैदा होगा जो पूरी दुनिया को इल्म से सेहराब करेगा कुछ लोगो ने उसका नाम पूछा तो आपने कहा के मैं उनका नाम तो नहीं बताऊंगा लेकिन बस इतना समझ लो के पूरा आलम उसकी नुसरत करेगा और उसका लकब **ज़ाफ़र** होगा जो जिन्नातों पर हुकूमत करेगा, लेकिन वह इनकी अतात नहीं करेंगे और यह सब

क़यामत के अनकरीब होगा। तो लोगो ने पुछा क़यामत के और क्या आसार है तो आपने कहा के यमन से एक हसन नाम का शक्स उरूज़ करेगा और वह बहुत इंसानों का खून बहाएगा अबू सुफियान की नसल से एक शक्स पैदा होगा जो शाम इराक पर हुकूमत करेगा और बड़ा ज़ालिम होगा।

रसूल (सल-लल्ला-हु-अलैहे-वसल्लम) की नबूवत के तकरीबन १६ या १७ साल के बाद रसूल (सल-लल्ला-हु-अलैहे-वसल्लम) से सहाबाओ ने फिर क़यामत के आसार पूछे तो आपने फ़रमाया:-

१) मशरिक से काला धुआ आग के साथ उठेगा जो मगरिब तक फ़ैल जाएगा जिस वजह से लोग मशरिक से मगरिब की तरफ भागेंगे।

२) यह दिन जुमा का होगा और सुबह का पहला पल और तरीक १० मुहर्रम।

३) मदीने और मक्के के बीच लूद नाम की जगह धस जाएगी।

४) शाम की हुकूमत फिलिस्तीन और हमास तक पहुंच जाएगी।

५) मस्जिदों की मीनारे बुलंद और नक्शे दार होंगी। मस्जिदे नमाजियों से भरी होंगी लेकिन कोई सच्चा नमाज़ी नहीं होगा।

६) औरतो के बाल उन्के सरो पे ऊंट के कज़ाबा की तरहा बंधे होंगे।

७) औरते आदमियों पर हुकुम राह होंगी। औरते आदमियों की तरहा और आदमी औरतो की तरहा दिखेंगे।

८) शर पसंद लोग और ज़राइम पेशा लोग हुकूमत करेंगे।

९) औरतो के दलाल इज्ज़तदार कहलाएंगे।

१०) गुनाहों के लिए शब के तरीके की ज़रूरत नहीं पड़ेगी।

११) मुसलमानों के घरो में खुशियों के मौको पर कुरआन की तिलावत के बदले गाने बजाने होंगे।

१२) शहरे कुफा में फुरात का पानी सडको और गलियों में फ़ैल जाएगा।

१३) नसरानी इराक और ईरान में लाखो मुस्लमान का खून बहायेंगे और उसपर काबिज़ हो जाएंगे।

१४) हिन्द, तिब की वजह से तबाह और बर्बाद हो जाएगा और तिब की बर्बादी चीन के हाथो होगी।

१५) ज़ल-ज़लो की भरमार होगी। दुनिया जुल्म और जोर से भर जाएगी।

१६) कम नाप तोल एक आम बात होगी।

१७) कुरआन को एक कुहाना किताब समझी जाएगी।

१८) मस्जिदों के मिम्बरो से क़ाज़ी अच्छी बातो को बयान करेंगे लेकिन खुद उसपर अमल नहीं करेंगे।

१९) हज़रत नूह के बेटे से नमस्द की आल से याजूद माजूद एक जंग करेंगे जिसमे एक भाई मार जाएगा। तो लोगो ने सवाल किया के किसके हाथ मारा जाएगा तो आपने कहा के वह एक सच्चा मुसलमान होगा।

२०) एक साथ **६०** लोग नबूवत का दावा करेंगे।

हज़रत अली ने खिलाफत संभालते ही एक कमिटी मुक़र्रर की ताकि हज़रत उस्मान के कातिल का पता लगाया जाए इसकी सदारत जनाब साद बिन अबी व्यास को बनाया ताकि तफ्तीश की जा सके। आप बनी उमय्या के कबिले मेसे थे और हज़रत अली से बैत नहीं की थी। जनाब साद बिन अबी व्यास ने लोगो को बुलाया जिसमे मरवान, नयेला, हज़रत आएशा और कुछ उनके गुलाम वगैरह लेकिन उसमे से कोई नहीं आया सिर्फ अपनी जगह रहते हुए कुछ मरने वालो के नाम बताए गए जिस वजह से कमिटी किसि फैसले पर नहीं पहुंच पाए।

अब हज़रत अली ने तमाम गवर्नरो को बदलना शुरू किया जिसमे सबसे पहले अब्दुल्लाह बिन अब्बास बिन अब्दुल मुताल्लिब को यामा का गवर्नर बनाया और यहाँ के गवर्नर अली बिन उमय्या ने अपने को हटता देख फ़ौरन बैतुल माल को अपने तबे में लेकर मक्के पहुंच गया और हज़रत आएशा से मिले और बोले हम हज़रत उस्मान का बदला लेंगे याअली बिन उमय्या ने हज़रत आएशा को एक ऊंट पेश किया इस ऊंट का नाम था "अस्कर" जो एक निहायत खूबसूरत था। अब बारी थी मिस्र के गवर्नर को हटाने की जिनका नाम था अब्दुल्लाह बिन साद इनकी जगह कैज़ बिन साद को गवर्नर बनाया गया। हालात को देखते हुए अब्दुल्लाह बिन साद और उमरू आस मिल गये और जनाबे माविया से हाथ मिला लिया इसका नतीजा यह हुआ की मिस्र के आधे लोगो ने कैज़ को गवर्नर मानने से इनकार करदिया और कहा जब तक हज़रत उस्मान के कातिल को सजा नहीं मिलेगी हम हज़रत अली से बैत नहीं करेंगे। तीसरे गवर्नर उस्मान बिन हनीफ को बसरे का गवर्नर बनाया उस वक्त वहां के गवर्नर जनाब अब्दुल रहमान बिन आमिर थे। इन्हों ने भी बैतुल माल का सारा माल अपने कब्ज़े में करलिया और मक्के में हज़रत आएशा के पास तशरीफ़ ले गए अब बारी थी कूफे की जहां के गवर्नर वलीद बिन अक़बा थे। वलीद बिन अक़बा को जब यह मालूम हुआ के अमारा बिन शाहान को गवर्नर मुक़र्रर किया जा रहा है तो उन्होंने एक चाल के तहत मजलिसे शूरा की और उसमे अबू मूसा अशरी को गवर्नर मुक़र्रर कर दिया और खुद दमिश्क पहुंच कर जनाबे माविया से मिल गया।

जब अमारा बिन शाहान कूफ़े पहुंचे तो अबू मूसा अशरी ने कहा आप चुपचाप मदीने वापस लौट जाए वरना आपको क़त्ल करदिया जाएगा। अब बारी थी शाम की जनाब सोहेल बिन हनीफ को गवर्नर बनाकर भेजा लेकिन जब वह रास्ते में ही थे तो उनको खबर मिली की उनको शाम पहुंचते ही क़त्ल करदिया जाएगा इसलिए वह मदीना लौट आए। अबू मूसा अशरी ने हज़रत अली की खिदमत में एक खुतूत रवाना किया और उनकी अतात कबूल की लेकिन ३ महीने के बाद शाम से एक ख़त रवाना किया जब यह ख़त हज़रत अली ने खोला तो यह ख़त खाली था यानी इसमें कुछ नहीं लिखा था। हज़रत अली ने कासिद से पुछा के यह क्या माजरा है तो कासिद ने जवाब दिया के यह पूरी जंग की तैयारी हो रही है उसके बाद हज़रत अली ने १३००० का लश्कर तैयार किया

लेकिन इसी बीच आपको मक्के से खबर आई के अली की मुखालिफत शुरू हो चुकी है इस लिए आपने शाम पर हमला रोक दिया।

२५ रबिउस्तानि ३६ हिजरी के दिन हज़रत आएशा, तल्हा, ज़ुबैर ने ८००० फ़ौज के साथ बसरा पर कब्ज़ा करलिया और उस्मान बिन हनीफ को गिरफ्तार कर लिया तल्हा ने चाहा के उस्मान को क़त्ल करे तो उस्मान ने कहा यह सॊच लो, मेरा भाई सुहैल जो मदीने में है वह तुम्हारे खानदान वलॊ को मार देगा, इस लिए हनीफ को छोड़ दिया गया उस्मान किसी तरहा मदीने पहुंच गया बसरा के पूरे हालात से वाकिफ कराया।

इधर हज़रत आएशा बसरे से थोडा आगे बढ़ी जब वह हब्बाब नाम की जगह पहुंची तो वहाँ पर पहुंचते ही कुछ कुत्ते भौकने लगे आपको फ़ौरन नबी की हदीस याद आ गई क्युकी रसूल ने उम्मे जमील, हफ्सा और हज़रत आएशा के सामने यह कहा था के मेरी एक ज़ौजा पर हब्बाब के कुत्ते भौकेंगे जो उस वक्त हक़ पर नहीं होगी तो आपने फ़ौरन अपनी सवारी स्कवाई और दरियाफ्त किया के यह जगह कौनसी है किसी ने कहा यह हब्बाब है तो आपने कहा मैं फ़ौरन मदीने वापस जा रही हूँ। लेकिन तल्हा और मरवान ने झूटी गवाही के तहत वकीन दिलाया के यह जगह हब्बाब नहीं है।

इधर बसरे की खबर सुनकर हज़रत अली ने **२०००० का** लश्कर लेकर जविया के मुकाम पर पहुंच गए और वहाँ पर खुतूत के ज़रिए अपने पैगाम तल्हा और ज़ुबैर को पहुंचाए और एक ख़ास खुतूत हज़रत आएशा के पास पहुंचाया लेकिन वह ख़त चालाकी के तहत हज़रत आएशा को नहीं दिया और अपने खुतूत के ज़रिए यह कहा के वह जंग के लिए तैयार है (यानी के हज़रत अली जंग करना चाहते हैं) यह सुनकर हज़रत अली अपने लश्कर के साथ बढे और मैदाने जमल में पहुंच गए इस जंग को ***जंगे जमल*** के नाम से जाना जाता है।

(जंग-ए-जमल)

हज़रत अली के मुकाबले हज़रत तल्हा की रहनुमाई में ३०,००० का लश्कर जंग के लिए तैयार खड़ा था दोनों फ़ौजे इस वक्त आमने सामने थी। हज़रत अली ने आगे बढते हुए एक कड़क आवाज़ में ज़ुबैर को ललकारा ज़ुबैर घबरा गया और सामने आ कर बोला कहिए क्या बात है हज़रत अली ने कहा क्या तुमको वह बात याद नहीं है जो रसूल-ए- खुदा (स.अ) ने तुमसे कही थी के तुम अली से जंग करोगे और जालिमो में शरीक होगे तो ज़ुबैर ने जवाब दिया बेशक मुझे याद है लेकिन हम खून-ए-उस्मान का बदला चाहते हैं तब हज़रत अली ने कहा के उस्मान को तुमने ही तो मारा है और बदला हमसे चाहते हो और आगे हज़रत अली ने यह भी कहा के खुदा अपना अज़ाब नाजिल करे उन लोगों पर जिन्हों ने हज़रत उस्मान पे सखतिया की और क़त्ल किया इतने में ज़ुबैर की नज़र अम्मार यासीर पर पड़ी जिनके बारे में रसूल-ए-करीम (स.अ) ने फरमाया था के अम्मार एक बागी गिरहो के हाथों क़त्ल किया जाएगा।

अब ज़ुबैर का इरादा बदल चुका था इसलिए वह वापस आया और तल्हा और मरवान से कहा के मैं जंग में हिस्सा नहीं लूंगा इस लिए मैं वापस जा रहा हूँ। मरवान ने कहा ठीक है तुम जा सकते हो ज़ुबैर के जाने के बाद मरवान ने तल्हा से कहा के अगर इसकी खबर उम्मुल मोमिनीन को लग गई तो हमसब बे मौत मारे जायेंगे और यह जंग भी स्क जाएगी तल्हा ने फ़ौरन उमरू बिन जरूर से कहा के तुम ५० लोगो के साथ ज़ुबैर का पीछा करो और इसे मार डालो। इन ५० लोगो ने मिलकर ज़ुबैर का क़त्ल करदिया अब बारी थी तल्हा की इस लिए हज़रत अली ने तल्हा को आवाज़ दी और कहा तुम रसूल-ए-करीम (स.अ) की ज़ौजा को जंग के मैदान में ले आओ और अपनी ज़ौजा को घर में छोड़ आओ। क्या तुमने हमारी बैत नहीं की थी, क्या तुमने हज़रत उस्मान का क़त्ल नहीं किया था, या तुम उसमे शरीक नहीं थे। तल्हा ने जवाब दिया आप बेकार की बाते ना करें तब हज़रत अली ने कहा मैं अपना पैगाम उम्मुल मोमिनीन के पास भेजना चाहता हूँ उसने कहा ठीक है आप किसी को भेज दें तब हज़रत अली ने कहा अपनी फ़ौज में से कौन है जो हमारा पैगाम उम्मुल मोमिनीन तक लेजाएगा लेकिन यह समझलो के तुम मौत के मूह में जा रहे हो यह गुलाम जिसका नाम मुस्लिम बिन अब्दुल्लाह मजाशी था आगे बढ़ा और बोला मैं जाना

चाहता हूँ हज़रत अली ने उसके हाथ में कुरआन दे दिया और कहा जाओ इसे उम्मुल मोमिनीन के पास पहुंचा दो. जब वह फ़ौज के बीच में पहुंचा तो तल्हा ने हुकुम दिया के इसका क़त्ल करदो और गुलाम को क़त्ल करदिया गया बस इसका क़त्ल होना था जंग शुरू हो गई सबसे पहले हज़रत अली ने अपने बेटे मुहम्मद हनिफिया को हुकुम दिया बेटा आगे बढ़ो और फ़ौज पर हमला करो हनिफिया आगे तो बढे लेकिन घबरा कर रुक गए. हज़रत अली ने पुछा क्यूँ रुक गए बेटा तो हनिफिया ने जवाब दिया तीर बहुत तेज़ी से चल रहे हैं कुछ कम हो जाए तो आगे बढ़ू तब हज़रत अली ने आगे बढते हुए हनिफिया की पुश्त पर तलवार की नोक से चोट कर दी और खुद जंग में चले जाते हैं। एक ज़ोर दार जंग शुरू हो जाती है इधर तल्हा हज़रत आएशा के ऊंट के पास मौजूद रहते हैं, मरवान मौका देख कर ज़हर भरा तीर तल्हा पर चलवा देता है, यह तीर तल्हा की पिंडली में लगता है और उसी हालत में तल्हा की मौत हो जाती है। हज़रत अली की पूरी फ़ौज जोर दार हमले के साथ उस ऊंट तक पहुंच जाते है जिसका नाम अस्कर था। ऊंट की झूल और कजावा में इतनी तीर पेवस्त होते हैं जिस तरहा सेही की पीठ पर कांटे. इसी बीच वजीर बिन दजला नजफ़ी आगे बढ़कर ऊंट की टांगे काट देते हैं ऊंट के गिरते ही फ़ौज में भगदड़ मच जाती है हज़रत अली मुहम्मद बिन अबुबकर को हुकुम देते हैं के वह हज़रत आएशा को ऐतेराम के साथ ले जाए आप हज़रत आएशा को अब्दुल्लाह बिन हनीफ खेराजी बसरी के मकान में कयाम कराते हैं जंग ख़त्म होने के २ रोज़ बाद मुहम्मद बिन हज़रत अबुबकर की निगरानी में हज़रत आएशा को मदीने की तरफ रवाना करदेते हैं। इस तरहा जंग-ए-जमाल में हज़रत अली की फ़तेह हो जाती है और बसरे पर कब्ज़ा हो जाता है। यह जंग ९ **रज्जब ३६ हिजरी** को लड़ी गई थी।

(जंग-ए-सिफ्फिन)

हज़रत अली ने यह सोचा की कहीं माविया फारस और मिस्र में कब्ज़ा ना करलें इसलिए **हज़रत अली ने २२ रज्जब ३६ हिजरी को मदीने की बजाए कुफे को दारुल खिलाफत करार दिया** और **२५ रज्जब** के दिन **ज़ारी बिन**

अब्दुल्लाह बिजली के जरिये बैत का पैगाम माविया को भिजवाया और उसमें लिखा के आप मेरी बैत करें और अगर आपको हज़रत उस्मान के कातिलो के बारे में कुछ शिकायत है और आप उनसे कसास लेना चाहते हैं तो आप अदालत में उसका मुकदमा दायर करें मैं खुदा की कसम खाता हूँ के किताबे खुदा और सुन्नत-ए-रसूल के ज़रिए इसका फैसला कर लूँगा।

हज़रत माविया ने अब्दुल्लाह बिजली को पूरे दमिश्क में घुमवाया और खैरियत के साथ वापस भेज दिया। अब्दुल्लाह बिजली ने दमिश्क का पूरा वाकिया हज़रत अली को पेश किया और कहा अब जंग के अलावा और कोई भी रास्ता नहीं है।

५ शव्वाल ३६ हिजरी को हज़रत अली कूफ़े से मकिला नाम की जगह पर चलते गए और उसे अपनी छावनी बना लिया चारो तरफ से लश्कर इकट्ठा किया जिसकी तादाद ८,४०० तक पहुंच गई फिर आपने जियाद बिन नज़र, शरिया बिन हरिस को ८००० के लश्कर देकर शाम की तरफ रवाना किया और कहा के वहां के जोभी हालात हो हमे उससे वाकिफ करवाओ। लेकिन जंग की शुरवात मत करना जब वह लश्कर आगे बढ़ा तो पीछे से मालिक-ए-अश्तर की सदारत में १०००० का लश्कर भेजा जब यह दोनों लश्कर स्क्का नाम की जगह पर पहुंचे तो उन्हों ने देखा की अबुवाला सुल्मी २५,००० का लश्कर लिए तैनात है तो इन्होने ने भी अपना लश्कर खेमा ज़न करलिया दिन में तो कोई लड़ाई नहीं हुई लेकिन अबु वाला ने शब खूना मारा जब सुबह हुई तो मालिके अश्तर अपने लश्कर के साथ शामि लश्कर पर टूट पड़े जिससे इन लोगों के पाँव उखड गए और वह भाग कर शाम के हकीम माविया के पास पहुंचे तो उस वक्त फसल रोम जो दरिया-ए-फुरात के किनारे खेमा ज़न थे तब माविया ने उमरू आस से कहा के आप कोई मैदान तलाश करें तब अमरु आस ने सिफ्फिन नाम का मैदान तजवीज़ किया (चुना) जोकि कुफे और शाम के बीच था। अब दोनों फौजें आमने सामने थी इसी बीच मुहर्रम का महिना शुरू हो गया और जंग स्क गई।

१ सफ़र ३७ हिजरी को हज़रत अली ने मालिके अश्तर को अलमबरदार बनाकर भेजा और जनाबे माविया के तरफ से हबीब बिन मुस्लिमा सरदार बनकर आगे आए और जंग शुरू हो गई।

२ सफ़र **३७** हिजरी को हाशिम बिन अकबा और अब्वाला सलमी में जंग हुई।

३ सफ़र **३७** हिजरी अम्मार यासीर और उमरू आस में जंग हुई।

४ सफ़र **३७** हिजरी में मुहम्मद हनिफिया और अब्दुल्लाह बिन हज़रत उमर के बीच जंग हुई।

५ सफ़र **३७** हिजरी अब्दुल्लाह बिन अब्बास और वलीद बिन अक्बा के बीच जंग हुई।

६ सफ़र **३७** हिजरी कैस बिन साद और ज़ुल्कुमा में जंग हुई।

७ सफ़र **३७** हिजरी मालिके अश्तर और हबीब बिन मुस्लिमा के बीच जंग हुई।

८ सफ़र **३७** हिजरी हज़रत अली और उमरू आस के बीच जंग चली।

९ सफ़र **३७** हिजरी अब्दुल्लाह बिन अब्बास और हबीब बिन मुस्लिमा के बीच जंग हुई।

९ सफ़र **३७** हिजरी को जंग ने ज़ोर पकड़ा अबू अब्दिया मररि के नेज़े से अम्मार यासीर शहीद हो गए, इसी दिन हाशिम बिन अक्बा भी शहीद हो गए लेकिन अम्मार यासीर के शहीद होते ही शामी फौजों में भगदड़ मच गई क्युकी उन्होंने सुन रखा था के अम्मार एक दिन बागी गिरहो के हाथों शहीद होंगे लेकिन अमरू ने यह ऐलान करवाया के यासीर के कातिल हम नहीं अली है क्युके वही इन्हें लेकर जंग करने आये हैं जब यह सदा अली के कानो मेंन पड़ी तो उन्हों ने कहा बेशक हज़रत हमज़ा के कातिल रसूल अल्लाह (स.अ) हैं क्युकी वह उन्हें जंग में लेकर गए थे। इसके बाद जंग ने बहुत ज़बरदस्त ज़ोर पकड़ा और **९** सफ़र का सूरज डूब गया लेकिन यह एक ऐसी जंग थी जो रुकी नहीं अब वह रात नमूदार हुई जिसको तारीक में **लैलातुल हरार** का नाम दिया है।

लश्कर के तीर ख़त्म हो गए नेज़ो की **आलिया** टूट गई और चाँद भी डूब गया अब सिर्फ अँधेरा, तलवारे और एक दुसरे के खून के प्यासे मुसलमान जो की दोनों हक़ पर होने का दावा कर रहे थे, घोड़ो की हिन-हिनाने की आवाजें इंसानों की चीखने की आवाजें और तलवारों की आवाजें इस तरहा आ रही थी जैसे धॉबि घाट पर कपडा धुलने की आवाजें आया करती है किसने किसको मारा अल्लाह के सिवाए कोई नहीं जानता जब सुबह का सूरज नमूदार

हुआ तो ७०,००० लोग शहीद हो चुके थे। ४५,००० शामी फौजें और २५,००० अल्वी फौजें जंग जोर पकडे हुए है और यह दिखा रही है देखो इन्ही लाशों में रोमियो नसरानियो और यहूदियों का खून बहाया था देखो इसमें ४०० सहाबाने कद्र भी है और ८० सहाबीए रसूल भी हैं एक ही किताब एक ही सुन्नत और एक ही अल्लाह के मानने वालें भी हैं आज नबी (स.अ) या तो खुश होंगे या रंजीदा आखिर सब उनकी ही तो उम्मत है लेकिन फिरभी जंग ना रुकी इसी बीच अमरू आस ने नेज़े पे ५०० कुरानो को बुलंद करदिया और वह अपनी चाल में कामियाब हो गये क्युकी अल्वी लश्कर में फूट पड़गई साद बिन फिद्का तमीमी जो कबिलाये बनी तमीम से था २०,००० के लश्कर से साथ अल्वी लश्कर से अलग हो गया और उसने हज़रत अली से कहा के आप जंग रोक दें हज़रत अली ने कहा के तुम इस फरेब में ना आओ हम जंग जीतने ही वाले हैं लेकिन वह जिद पर अड़ गए और गुस्ताखी करने लगा तब हज़रत अली ने यज़ीद बिन हानि को भेजा और कहा के मालिके अश्तर से कहो वह लौट आये जब उसने यह पैगाम मालिके अश्तर को दिया तो मालिके अश्तर ने कहा के अब यह मुमकिन नहीं क्युकी हम फ़तेह के अनकरीब हैं।

इब्ने हानि ने लौटकर हज़रत अली को सूरत-ए-हाल बताया तो इस बात पर साद ने कहा के आपने जान बूझकर मालिके अश्तर को मना किया है तब, हज़रत अली ने कहा हमने तुम्हारे सामने उसको भेजा है तो यह कैसे हो सकता है, आपने कहा के अगर आप जंग नहीं रोकते हैं तो आपका भी हम वही हशर करेंगे जो हज़रत उस्मान के साथ हुआ था। तो फिर हज़रत अली ने इब्ने हानि को भेजा जब उसने मालिके अश्तर से कहा तुम्हे फ़तेह प्यारी है या हज़रत अली की जान यह सुनते ही मालिके अश्तर लौट आए।

इस तरहा १० सफ़र ३७ हिजरी को जंग-ए-सिफ्फिन रुक गई। अब दोनों तरफ से यह तय हुआ की हम लोग दोनों तरफ से एक-एक हक्मैन फैसला करेगा और वह जो फैसला करेंगे उसको दोनों तरफ के फरीक मानेंगे तो माविया की तरफ से उमरू आस का नाम लिया गया और हज़रत अली की तरफ से काफी कशमकश के बाद अबू मूसा अशरी का नाम लिया गया इसपर हज़रत अली ने कहा के मुझे मूसा अशरी पर भरोसा नहीं है लेकिन साद वगैरह के अड जाने की वजह से अबू मूसा अशरी को हरमैन बनाया गया।

उमरू आस और मूसा अशरी दोनों हक्मैन मुक़र्रर किए गए इन दोनों का काम यह था के हज़रत उस्मान के कातिलो का पता लगाया जाए १३ सफ़र ३७ हिजरी को यह भी तय हुआ के यह एक मुहायदा बनाया जाए ताकि कारवाही की जा सके मुहायदा लिखने के लिए उमरू आस बैठे इसमें हज़रत अली के नाम के आगे अमीरूल मोमिनीन लिखा गया इसपर उमरु आस ने कहा के यह अलफ़ाज़ आपको काटना पड़ेगा क्युकी अगर हम आपको अमीरूल मोमिनीन समझते तो यह जंग क्यों लड़ना पड़ती इस बात के ऊपर अश शाद बिन कैस और उसके कबीले वालो ने कहा के यह अल्फाज़ काटने में हर्ज़ क्या है काट दिया जाए. इसपर अखनूफ़ बिन कैस ने कहा यह अलफ़ाज़ नहीं कटेगा इसपर हल्ला हो गया तब हज़रत अली ने कहा जब मैंने हुबैदिया का मुहायदा लिखा था तब कुरैश के बन्दे सुहैल ने रसूल अल्लाह यह अलफ़ाज़ काटने को कहा था तो मैंने उसपर ऐतराज़ किया था तो इसपर रसूल ने फ़रमाया था के अली यह अलफ़ाज़ काट दो क्युकी तुम्हे भी एक दिन ऐसे ही परेशानी का मुकाबला करना पड़ेगा और तुम मजबूर होगे इसपर उमरू आस ने कहा के आप क्या मुझे वैसा ही कुफ्फार समझते हैं तो हज़रत अली ने कहा तुम दोस्त कब थे मुसलमानों को यह सुनकर उमरू आस ने कहा के आज के बाद हम आपसे आमना सामना नहीं करना चाहेंगे इसपर हज़रत अली ने कहा हम ऐसा ही चाहेंगे तुम हमारी महफ़िल और मज्लिश से दूर रहो दुबारा फिर मुहायदा लिखा जाने लगा तो उमरू आस ने पुछा के क्या आप माविया और उसके साथियों को मोमिन समझते हैं अली ने कहा मैं तो नहीं समझता लेकिन तुम जो चाहो उसके आगे लिख सकते हो और कह सकते हो मुहायदा की शर्ते इस तरह थी।

१) हक्मैन किताबे खुदा से फैसला करेंगे। अगर यह मुमकिन न हो तो सुन्नत-ए-रसूल से फैसला करेंगे।

२) दोनों फरीकैन हकमैनो के फैसले को मानेंगे अगरचे वह किताबे खुदा और सुन्नत-ए-रसूल से होगा।

३) अगर शहादतों की ज़रूत पड़ेगी तो दोनों फिरके शहादतें मुहैया करायगी।

४) अगर किसी हाकम की मौत हो जाती है तो उसकी जगह दूसरा हाकम मुक़र्रर किया जाएगा।

५) हर हाल में इसी बरस के रमजान तक हक्मैन का फैसला हो जाना चाहिए।

६) फैसला कूफे और शाम के बीच किसी दूसरी जगह पर होगा।

७) दोनों फिरके के बीच तब तक जंग नहीं होगी।

जब इन मुहाईदो पर शहादतें और दस्तखत हो गए तो **अशअस बिन कैस** ने हर कबीले के खेमो में जाकर पढ़ कर सुनाया इस कबीले बनी अजान के दो भाइयो साद और मुराद के मूह से एका-एक निकला ला हुकुमा इल्लिल्लाह् (यानी हाकम सिर्फ अल्लाह है) और अल्लाह के दीन में किसी को हाकम बन्ने की इज़ाज़त नहीं है।

जब बनी तमीम को यह सुनाया गया तो उन्हों ने भी ऐतराज़ किया यही कबीला जो जंग स्कवाने पर आमादा था बगावत पर उतर आया बमुश्किल अशअस बिन कैस ने जान बचाई इसपर मुहाज़ बिन खानीफ ने हज़रत अली से कहा के अगर आप हमारा साथ चाहते हो तो यह मुहायदा तोड़ दीजिए इसपर हज़रत अली ने कहा यह मुमकिन नहीं है यह लड़ाई हमारी और माविया की है ज़ाती लड़ाई नहीं है अब हक्मैन के फैसलों का इंतज़ार करना होगा यह कहकर हज़रत अली ने कुफे की तरफ फ़ौज की वापसी का हुकुम करदिया।

इन हालातो के बाद एक नई जमात सामने आ गई जो अल्वी और उस्मानिया के आलावा तीसरी जमात बनगई जिसको ख़ारिजी या हासरिया कहा गया जब यह फौजे कूफे के करीब पहुंची तो इस फ़ौज से १२००० अफराद हसरारा नाम की जगह पर स्क गए और कुफे जाने से इनकार करदिया और इन्होने अपना अमीर शीश बिन रबई और अपना जमाती इमाम अबू कवा को मुक़र्रर करदिया। ५ शव्वल ३७ हिजरी को अजराहा नाम की जगह पर दोनों फिरको की तरफ से ४००-४०० लोग इकठ्ठा हुए शाम की तरफ से अबू आला स्ल्मी और कोफे की तरफ से अब्दुल्लाह बिन अब्बास यह लोग खुसूस मेहमान थे इनके आलावा तमाम दुसरे लोग जो मदीने, मिस्र, बसरा, कूफ़े की तरफ से थे इसके आलावा तमाम सहबिए रसूल खुसूसन साद बिन अबी व्यास, अब्दुल रेहमान, मुन्गीरा बिन शीबा वगैरह भी मौजूद थे जब सभी लोग बड़ी बेसबरी से फैसले का इंतज़ार कर रहे थे तभी अचानक उमरू आस ने जनाब मूसा अबू अशरी से कहा के हम लोग कोई फैसला करने से पहले तन्हाई से आपसी बातचीत करले दोनों ने तन्हाई में बाते की और अपने अपने मुकाम पर जा कर बैठ गए इसी बीच अब्दुल्लाह बिन अब्बास ने मूसा अशरी से कहा के आपने जो भी बात या फैसला किया है हमको उससे कोई मतलब नहीं लेकिन यह जान लिजीए

के उमरू आस नेहायत होशियार और चालाक है यह आपको धोका दे सकता है। इसलिए जो भी ऐलान हो पहले आप उमरू आस को करने दें यह सुनकर मूसा अशरी ने कहा के हमारी बातों में धोका और फरेब की कोई जगह नहीं है।

उमरू आस खड़े हुए और ऐलान किया के हमने और मूसा अशरी ने मिलकर कुछ फैसला किया है और मैं चाहता हूँ के बरतरी और इल्म में मूसा अशरी हमसे ज्यादा है, इसलिए पहले वह अपने फैसले का ऐलान करे अपनी तारीफ़ सुनकर मूसा अशरी खुश हो गए और ऐलान करने के लिए खड़े हो गए और कहा के हमने यह फैसला किया है के अली और माविया को माजूल करके मजलीशे शूरा के ज़रिए नया खलीफा चुना जाए इसलिए मैं अली को खिलाफत से माज़ूल करता हूँ। इसके फ़ौरन बाद उमरू आस खड़े हुए और कहा आप लोगो ने सुन लिया के अबू मूसा अशरी को अली ने मजूर करदिया है अब रही बात माविया की उनकी माज़ूली का सवाल ही नहीं होता है क्युकी वह उस्मानिया के सच्चे वारिस और खिलाफत के सच्चे हकदार है यह सुनते ही एक हुडदम मच गया और अबू मूसा लाख चीखते रहे लेकिन उनके साथ धोका हुआ है किसी ने उनकी ना सुनी इस तरह खिलाफत अली के हाथ से निकल गई।

(जंग -ए- नेहरवान)

यह जंग ९ सफ़र ३८ हिजरी को लड़ी गई जंग के पहले हज़रत अली ने यज़ीद बिन हसीन और अब्दुल्लाह बिन वहाब जो की खारिज थे खुतूत भेजा, इन लोगों की तादाद तक़रीबन १२००० थी अली ने खुतूत में लिखा के शाम पर जंग की तैयारी है और हम आप से मदद चाहते हैं इन लोगो ने अली को खुतूत का जवाब इस तरह भेजा आपने तेहकीन पर अमल करके कुफ्र का इज़हार किया था तो अगर आप पहले तौबा करले तो हम आपका साथ देंगे नहीं तो हम आपसे जंग करेंगे।

ख़त का जवाब सुनकर अली खामोश हो गए और फौजों को इकट्ठा करने में लग गए और फौजे इकट्ठा हो गई और शाम की तरफ कूच करने ही वाले थे की खारिजो ने बगावत करदी खारिजो ने नेहरवान के आमिल अब्दुल्लाह बिन जन्दीद और हामला कनीज़ को क़त्ल करदिया इसके आलावा बनी ताई की तीन औरतो को भी क़त्ल कर दिया और लूट मार शुरू करदी हज़रत अली ने इस खबर की तस्दीक के लिए हारिस बिन मुर्रा को तहकीकात के लिए नेहरवान भेजा खारिजो ने उनको भी क़त्ल करदिया अब हज़रत अली अपना लश्कर लेकर नेहरवान की तरफ बढ़े और जल्सदिया को एक पैगाम भिजवाया के अब्दुल्लाह बिन जन्दीब के कातिलो को हमारे हवाले करदो इसपर उसने कहा के सबने मिलकर खून किया है और आप सबका खून हमारे ऊपर डाल रहें हैं क्या यह वाजिब है ? तब हज़रत अली ने अबू अय्यूब अंसारी से कहा के तुम अमन का परचम दिखाओ और अय्यूब अंसारी ने यह ऐलान किया जो भी हमारे लश्कर में आना चाहे या जिन्हें मदियान या कूफे की तरफ जाना हो तो जा सकता है उन्हें हमारी अमान है। यह सुनकर फरवा बिन नौफील अपना ५०० का गिरोह लेकर अलग हो गया और धीरे-धीरे गिरोह के गिरोह अलग हो गए अब शिर्फ़ बमुश्किल २८०० का लश्कर बचा जो अल्वी लश्कर के हातो मारा गया इसमें से सिर्फ ९ अफराद ही बच पाए और अल्वी लश्कर से ८ लोग शहीद हुए इस जंग में इनका सरदार जुलसलिया भी मारा गया।

(बगावत-ए-ख़ारिज) (बनी नाज़िया)

सरदार खरीत बिन रशीद बिन नाज़िया के कबीले के साथ लूट पाट करते हुए कुफे से मदियन की तरफ चला गया। इसको मारने के लिए ज़ैद बिन हफ्सा की निगरानी में एक लश्कर हज़रत अली ने भेजा जब यह लश्कर मदियन के नज़दीक पहुंचा तो मालूम पड़ा के खरीत बसरे की तरफ बढ़ चूका है ज़ैद बसरे की तरफ बढ़े और खरीत से मुतभेड हो गई खरीत के १३० अफराद मारे गए और वह रात की तारीकी में एवास की तरफ भाग गया जब यह खबर कुफे की तरफ पहुंची तो हज़रत अली ने ज़ैद को वापस बुला लिया माकिल बिन कैस को २००० का लश्कर

देकर एवास की तरफ रवाना करदिया और बसरे के गवर्नर अब्दुल्लाह बिन अब्बास को हुकुम दिया के २००० के लश्कर से माकिल को मदद भेजे तो बसरे से नौमान बिन सहबान की सरदारी में माकिल से मिल गया जब यह खबर खरीत को लगी तो वह एवास के आगे रामहरजान नाम की पहाडियों में छुप गया बाद में वहाँ पर दोनों फौजों की टक्कर हुई और माकिल के **३७०** लोग मारे गए और वह वहाँ से भाग गया रास्ते में छोटे छोटे कबीलों को अपना हमनवा बनाता हुआ फारस के समुद्र के किनारे खेमा ज़न हुआ।

वहां पर **१९** जमादुल औव्वल **३८** हिजरी में मालिके अश्तर से मुठभेड़ हुई और नौमान के हाथ खरीत मारा गया बाकि सबको कैद करलिया गया और जो मुसलमान थे इनसे बैत लेकर आजाद कर दिया गया और नसरानियो से इस्लाम कबूल करने को कहा और जिन्हों ने इस्लाम कबूल नहीं किया उनको क़त्ल करदिया गया जिनकी तादाद **१३८** थी।

बनी नाजिया की औरतो बच्चो जिनकी तादाद **५००** थी जब उन्हें लेकर कुफे की तरफ आने लगे तो ईरान के छोटे से शहर जिसका नाम अर्द शेर खारा था वहाँ के आमिल मस्कीला बिन हिरा से इन कैदियों ने फ़रियाद की तो उसने ५ लाख दिरहम में इनको खरीद लिया और रकम **५** किश्तों में देना तय हुआ। पहली किश्त तो उसने अदा करदी लेकिन बकिया रकम के लिए खामोश हो गया जब हज़रत अली ने रकम का तकाजा किया तो भाग कर शाम चला गया और माविया से मिल गया माविया ने इसे **तब्रिस्तान** का गवर्नर बना दिया।

(शहादत-ए-मुहम्मद बिन अबुबकर)

हज़रत अली ने खिलाफत मिलने के बाद साद बिन कैस को मिस्र का गवर्नर बनाया था लेकिन मिस्र में दो फिरके हो गए थे **१) अल्वी, २) उस्मानिया**।

साद जब वहाँ के हालात पर काबू ना पा सके तो हज़रत अली ने मुहम्मद बिन अबुबकर को वहां का आमिल बनाया आप दो महीनो तक खामोश रहे, लेकिन जब उस्मानियो की सरगोशियाँ बढ़ गई तो इन्हों ने उनको कुचलने की मुहीम चलाई लेकिन वह पूरी तरह से कामियाब ना हो सके तो हज़रत अली ने मालिके अश्तर को मिस्र का गवर्नर बनाकर रवाना करदिया जब यह खबर शाम पहुंची तो माविया परेशान हो गया क्युकी उन्हों ने उमरू आस को मिस्र की गवर्नरी देनेका वादा किया था तो माविया ने मल्जूम नाम की जगह में और वहाँ के सरदार जैसतर से कहा की अगर तुम मालिके अश्तर को मार दो तो हमारी और तुम्हारी दोस्ती हो जाएगी और ज़िन्दगी भर तुमसे खीराज नहीं लिया जाएगा तो जब मालिके अश्तर शहर मल्जूम पहुंचे तो जैसतर ने पुरजोशी से उनका खैर मख्दम किया और खिदमत में शरबत पेश किया यह शरबत ज़हरीला था चुनांचे पीते ही मालिके अश्तर शहीद हो गए। अब माविया ने उमरू आस की सरदारी में ६००० का लश्कर मिस्र की तरफ रवाना किया यह खबर सुनकर अब्दुल्लाह इब्ने अबुबकर ने हज़रत अली को पैगाम भिजवाया के उनको फौरी तौर पर मदद भेजे हज़रत अली ने कहा हम जल्द फ़ौज रवाना करेंगे और बशीर बिन कुनान की सरदारी में २००० का लश्कर मिस्र की तरफ रवाना किया इधर अब्दुल्लाह इब्ने अबुबकर ने ४००० का लश्कर जमा करलिया था और उसमे से २००० का लश्कर उमरू आस को रोकने के लिए रवाना करदिया इस लश्कर से उमरू आस की मुठभेड़ हुई और १८०० के करीब शहीद हुए और बकिया २०० लोग भाग गए यह सुनकर इब्ने अबुबकर का बचा हुआ २००० लश्कर घबरा गया और इब्ने अबुबकर का साथ छोड़कर चला गया इब्ने अबुबकर एक घर में छुप गए मौका देख कर उमरू आस की फ़ौज ने उन्हें घेर लिया और ३ जिल्हिज ३८ हिजरी में भूका प्यासा क़त्ल कर दिया और अभी इनकी जान बाकी थी इनको गधे की खाल में सिलवाकर जलवा दिया और उमरू आस मिस्र के ऊपर काबिज़ हो गया रास्ते में जब बशीर के लश्कर को खबर मिली तो वह कुफे की तरफ वापस लौट आए।

(छुट-पुट जंगें)

१) बसरा :-

जब मुहम्मद बिन अबुबकर की शहादत की खबर आई तो बसरा के गवर्नर अब्दुल्लाह बिन अब्बास ने ज़ियाद बिन आबिद को आमिल बनाया और खिराजे अकीदत के लिए कुफे चले गए इसी बीच सफ़र ३९ हिजरी में माविया ने अब्दुल रहमान बिन आमिर को बसरा भेजा ७० लोगो के साथ यह लोग बनी तमीम में रूक गए और बसरा के लोगो को कसासे उस्मान के लिए उकसाने लगे जब थोड़े हालत बिगड़ने लगे तो ज़ियाद ने इसकी खबर कुफे भेजी तो हज़रत अली ने बनी तमीम के लोगो को बुलाया और बसरा जाने के लिए उनसे कहा और कहा के तुम जाकर अपने कबीले को समझाओ लेकिन इन लोगों ने इनकार करदिया उसपर हज़रत अली ने फ़रमाया के हम लोग रसूल अल्लाह सल-लल्ला-हु-अलैहे-वसल्लम के ज़माने में यह नहीं देखते थे के हमारे सामने हमारे भाई हमारे अज़ीज़ या हमारे कबीले वाले होते थे और जो कोई भी हक़ के खिलाफ खड़ा हुआ हम उसे क़त्ल करदिया करते थे अगर हम ऐसा न करते तो इस्लाम इतना परवान न चड़ता इस बात के ऊपर ऐन बिन सबिया जाने को राज़ी हो गए लेकिन बसरे में इनके हम कबीले ने इनको क़त्ल करदिया इसके बाद जविया बिन कद्दामा ५० अफराद के साथ कुफे से बसरा पहुंचे और अपने कबीले वालो को समझाने की कोशिश भी की लेकिन वहां हाता-पाई की नौबत आ गई तब आपने ज़ियाद बनी आज़ाद को अपनी मदद के लिए बुलवाया यह सुनकर अब्दुल रहमान बिन आमिर अपने साथियों के साथ बाहर आगया और तलवारें चलने लगी आखिर कार हारकर अब्दुल रहमान ने अपने ७० साथियों के साथ भाग कर साबिल अदि के घर में पनाह ली इब्ने कद्दामा और ज़ियाद ने उस घर को घेर कर आग लगा दी यह सारे के सारे अफराद जल कर ख़त्म हो गए इस वाकिए के बाद माविया को यकीन हो गया के अल्वी हुकुमतो के ऊपर कब्ज़ा करना इतना आसान नहीं क्युकी बनी आज़ाद माविया का भरोसे मंद कबीला था अब उसने सरहदों के ऊपर लूटमार और खुरेज़ी करना बेहतर समझा।

---

२) <u>शहर - ऐनुल - कमर</u> रबियुस्तानी ३९ हिजरी :-

यह वह जगह थी जिसको हज़रत अली ने असलाह खाना बनाया था इसलिए हज़रत माविया ने २००० का लश्कर नौमान बिन बशीर की अलमबरदारी में भेजा जब यहाँ के गवर्नर मालिक बिन काब अर्जी ने इसकी खबर पाते ही आप ने इसकी खबर कुफे रवाना करदी और वहां से फौजी मदद मांगी इसलिए हज़रत अली ने अदि बिन हातिम ताई की निगरानी में २००० का लश्कर तैयार किया जैसे ही लश्कर रवाना होने वाला था तो मालिक बिन काब ने पैगाम भिजवाया के अब लश्कर की ज़रूरत नहीं है हमने दुश्मनों को खदेड़ दिया है। ऐसा मालिक ने यह सोच कर किया के कहीं लश्कर आने में देर न हो जाए और हम जंग हार जाए इसलिए मालिक ने अपनी जाती बिनाह पर मखनीस बिन सलाम से मदद मांगी उन्हों ने शर्मा शुर्मी में ५० अफराद का लश्कर अपने बेटे अब्दुल रहमान की निगरानी में भेज दिया इधर ऐनुल कमर की दीवार के सहारे मालिक ने २०० अफरादो के साथ तलवारे हाथ में लेकर खड़े हो गए जब नौमान के लश्कर ने ५० अफराद का लश्कर आता देखा तो यह समझा के कुफे से मदद आ गई. और यह पहला दस्ता है इसलिए नौमान मैदान छोड़कर भागने लगा तब मालिक और उसके साथियों ने नौमान के पीछे से हमला करदिया इस जंग में ३०० अफराद हालाक हुए और नौमान भाग गया।

---

३) <u>जंग-ए-अम्बार</u> रज्जब ३९ हिजरी :-

सुफियान बिन ऑफ की निगरानी में ६००० का लश्कर माविया ने हिइ की तरफ रवाना किया और यह कहा के अम्बार तक बढ़ जाना उस वक्त हिइ के आमिल जनाब उमैल बिन ज़ियाद थे जब आपने सुना के शामी लश्कर हिइ की तरफ आ रहे है तो वह अपना तमाम लश्कर लेकर हिइ के बाहर एक मैदान में जमा हो गए और जंग की तैयारी में लग गए जब की उनको हज़रत अली की तरफ से हिदायत थी के किसी भी हाल में शहर न छोड़ो इसके आलावा आपने इस हमले की खबर कुफे भी नहीं भेजी जब सुफियान का लश्कर पहाड़ी रास्ते से हिइ पहुंचा तो उसे रोकने वाला कोई न था और वह आसानी से बड़ी लूट मार करता हुआ अम्बार की तरफ चला गया इत्तेफाक

से अम्बार में ५०० सिपाहियों का लश्कर शहर की हिफाजत के लिए तैयार था लेकिन उसमे के ३०० अफराद इधर उधर गए हुए थे और २०० अफराद अशअस की निगरानी में मैजूद थे और उन्हों ने जम कर के मुकाबला किया लेकिन सभी शहीद हो गए इस तरह सुफियान अम्बार पे काबिज़ हो गया।

---

४) <u>तीमा</u> शाबान ३९ हिजरी :-

१७०० का शामी लश्कर अब्दुल्लाह बिन नसाबा फजरी की निगरानी में आगे बढ़ा और इसको यह हुकुम था लूट मार करता हुआ मक्के से मदीने की तरफ बढ़ जाए छोटे-छोटे कबीलों को लूटता हुआ आगे बढ़ने लगा जब यह खबर कुफे पहुंची तो वहां से मसियाब बिन नाज़िया फराज़ी की निगरानी में २००० का लश्कर इसको रोकने के लिए आगे बढ़ा और दोनों का टकराव तिमि नाम की जगह पर हुआ जब यह जंग चल रही थी तो मसियाब ने आबिज़ से कहा तुम भाग कर अपनी जान बचा लो यह सुनकर शामी लश्कर में भगदड़ मच गई और अपने कुछ साथियों के साथ एक महल में बंद हो गया जब ३ दिन तक जंग नहीं हुई तो कूफी लश्कर ने महल को चारो तरफ से लकड़ियों के ढेर लगाकर आग लगा दी तो इसपर आबिज़ ने मसियाब से कहा के क्या तुम अपने कबीले वालो को मार डालो गे मसियाब ने आग बुझाने का हुकुम दिया और मसियाब ने अपनी फौजों से कहा के उन्हें जासूसों से यह खबर मिली है के एक बड़ा शामी लश्कर हमपे हमला करने आ रहा है सारी फौजे एक मैदान में इकट्ठा हो गई इस बात का फायदा उठाकर आबिद बिन मसियाब आपने साथियों की तरफ शाम की तरफ भाग गया।

---

५) <u>हिरा</u> शव्वल ३९ हिजरी :-

जहाग बिन कैज़ फहारी की निगरानी में ४००० का शामी लश्कर हिरा की तरफ बढ़ा और लूट मार करता हुआ सल्विया (सैतुस पक्थ) तक आ गया और इसने वहां एक हाजी कबीले को लूट लिया और क़त्ल करदिया जब यह खबर कुफे पहुंची तो इसके मुकाबले के लिए हारब बिन अदि की सरदारी में ४००० का लश्कर आगे बढ़ा यह दोनों

लश्कर तय्मीर नाम की जगह पर मिल गए सुबह से शाम तक जंग होती रही और रात के अँधेरे का फायदा उठा कर जहाग बिन कैज़ फहारी शाम की तरफ वापस लौट गया।

---

६) मक्का जिल्हिज्ज ३९ हिजरी :-

यज़ीद बिन शजरा हादी की निगरानी में हज के बहाने हज से २ दिन पहले मक्का पहुंच गया उस वक्त मक्के के आमिल कासम बिन अब्बास थे इसने उनसे कहा के आप और हम दोनों हज और नमाज़ की इमामत से अलग हो जाते है और किसी तीसरे को यह जिम्मेदारी दे देते हैं और अगर आप ऐसा नहीं करेंगे तो हम मक्के की सरज़मीन को खून से भर देंगे अचानक ३००० हाजियों की शकल में जो सिपाही शाम से आए थे उनको देख कर और अपनी कुवत को कम समझकर घबरा गए इन्हों ने फैसला किया के भाग कर किसी पहाड़ी पर छुप जाते हैं और वहां से हज़रत अली से कुमुक मांगते हैं इसपर अबू सईद बिन खुदरी ने मक्का छोड़ने से मना किया और कहा यह मुनासिब नहीं तो शीबा बिन उस्मान को हज पर नमाज़ का इमाम बनाकर हज के अरकान को तमाम करदिया गया जब यह खबर कुफे पहुंची के मक्के में शामी लश्कर खेमा ज़न हैं तो माकल बिन कैज़ की निगरानी में १२००० का अल्वी लश्कर पहुंचा लेकिन तब तक शामी लश्कर शाम वापस जा चूका था जो थोड़े बहुत बच गए थे उनको पकड़कर क़त्ल करदिया गया और माकल बिन कैज़ वापस लौट आए।

---

७) जज़ीरा बर्दम (बेहदम) रबिउल औव्वल ४० हिजरी :-

अब्दुल रेहमान बिन कवास की निगरानी में २००० का शामी लश्कर जज़ीरा की तरफ बढ़ा उस वक्त जज़ीरा के आमिल शाबान बिन आमिर थे उनके पास ब-मुश्किल ५०० का लश्कर था तब उन्होंने जज़ीरा की अवाम से शामी लश्कर से मुकाबला करने को कहा लेकिन अवाम शामी लश्कर से काफी खौफ जदा थी इसलिए उन्होंने शहर छोड़ने का फैसला किया तब इब्ने आमिर ने हिइ के गवर्नर कुमैल बिन ज़ियाद से मदद मांगी तो कुमैल ने ६०० का

लश्कर जज़ीरा भेज दिया जज़ीरा में दोनों लश्करो की मुट-भेड़ हुई जिसमे १९० शामी मारे गए बकिया लोग शाम वापस भाग गए।

---

८) यमन रज्जब ४० हिजरी :-

बसर बिन अतरा की सरदारी में ६००० का लश्कर तूफानी रफ़्तार से हिजाज़ की तरफ बढ़ा बसर बड़ा ज़ालिम शक्स था इसने हिजाज़ में काफी खून खराबा और बहुत लूट मार की और जिसने भी माविया की बैत से इनकार किया उसका क़त्ल करदिया जिसमे औरते बच्चे मर्द सब शरीक थे यह लश्कर लूट पाट करता हुआ यमन तक पहुंचा जब यह खबर कुफे पहुंची हज़रत अली ने तमाम सहाबियों को जमा किया और उनसे जंग पर जाने को कहा लेकिन बड़े कबिले का कोई भी सरदार राज़ी नहीं हुआ और कहा जब हिजाज़ और यमन पर शामी काबिज़ हो चुके हैं तो मिस्र की तरह इसको भी नज़र अंदाज़ कर दीजिए इसपर हज़रत अली ने फ़रमाया के मैं सोचता हूँ के मैं अपने १० सहाबी के बदले माविया का एक सहाबी ले लूं तब शर्मा शुर्मी में जारिया बिन कद्दामा जाने पर राज़ी हुआ और बमुश्किल एक हज़ार का लश्कर लेकर यमन की तरफ रवाना हुआ यमन में थोड़ी जंग हुई और बसर शाम की तरफ वापस लौट गया।

(शहादते हज़रत अली)

इस रोज़-रोज़ की जंगों से तंग आकर और अपने कबीलों का बदला लेने के लिए नेहार्वान के बचे हुए खारिज माहे शाबान ४० हिजरी में मक्के में जमा हुए और इन्होंने यह तय किया की हमारे कबीले के जो लोग मारे गए हैं उनके खून के ज़िम्मेदार माविया, उमरू आस, और अली है इन तीनो का क़त्ल करदिया जाए और फिर एक नया खलीफा बनाया जाए जो बनी तमीम का हो खारिज इसके लिए एक वक्त एक ही दिन मुक़र्रर किया गया वह

इसलिए की एक के क़त्ल की खबर दुसरे को न हो पाए और एक ही दिन तीनो का क़त्ल होने से तमाम मुसलमान बनी तमीम का लोहा मान लेंगे और हमारी चाल कामियाब हो जाएगी इसके लिए **१९** रमजान की शब और फजर की की नमाज़ का वक्त तय पाया और उन्होंने इस बात का ख़याल रखा की इस शाजिश की खबर बनी तमीम के आलावा और किसी को ना लगे और काबे को पकड़ कर कसम खाई **बर्क बिन अब्दुल्लाह तमीमी** ने **माविया** को क़त्ल करने की कसम खाई। **उमरू आस** को क़त्ल करने के लिए **आमस बिन बकर तमीमी** ने कसम खाई। **अब्दुल रहमान बिन मुलजिम तमीमी** ने **हज़रत अली** को क़त्ल करने की कसम खाई।

इस तरहा इन तीनो अफ़रादो ने अपना मकसद पूरा करने के लिए अपनी अपनी जगह यानी दमिश्क में माविया का क़त्ल करना था इसलिए बर्क बिन अब्दुल्लाह तमीमी दमिश्क रवाना हो गए।

उमरू आस का क़त्ल करने के लिए जनाब आमस बिन बकर तमीमी मिस्र के लिए रवाना हो गए। अब बारी थी हज़रत अली की इसलिए अब्दुल रहमान बिन मुलजिम तमीमी कुफे की तरफ रवाना हुए।

बर्क बिन अब्दुल्लाह तमीमी जनाबे माविया जो के फजर की नमाज़ की इमामत कर रहे थे बिलकुल उनके पीछे पहली सफ में खड़ा हो गया पहली सफ में जगह पाने के लिए उसने रात भर मस्जिद में कयाम किया और जैसे ही माविया पहले सजदे में गए बर्क ने इनके सर पर वार करदिया मस्जिद में तलातुम मच गया और कातिल को गिरफ्तार करलिया और बाद में क़त्ल करदिया गया क्युकी माविया का ज़ख़्म हल्का था और वार ठीक निशाने पे नहीं था इसलिए माविया की जान बच गई और एक महीने के अन्दर ही माविया चलने फिरने लगे।

अब बारी थी उमरू आस की इसलिए आमस बिन बकर तमीमी मस्जिद में तो पहुंच गए लेकिन इत्तेफाक से उमरू आस के सर में शदीद दर्द उठा और इन्हों ने अपनी जगह इमामत करने के लिए ख़ारिज बिन हज़िफा फेहरि को वापस भेज दिया अंधेरा होने की वजह से आमस बिन बकर पहचान ना सका और उसने उमरू आस की बजाए हज़िफा फेहरि का क़त्ल करदिया क़त्ल के इलज़ाम में आमस बिन बकर का भी क़त्ल करदिया गया।

अब बारी थी हज़रत अली की आपका क़त्ल करने के लिए अब्दुल रहमान बिन मुलजिम कुफे में आकर अपने ही कबीले तमीम में रुक गया लेकिन उसने यहाँ यह नहीं ज़ाहिर किया के उसके आने की वजह क्या है इस कबीले में उसकी नज़र एक खूबसूरत औरत पे पड़ी जिसका नाम कतामा बिन्ते अख्जर तमीमी था यह बिना शोहर के थी तो इब्ने मुलजिम ने उससे निकाह की ख्वाइश ज़ाहिर की कतामा ने कहा मेरा मेहर ३००० दिरहम एक कनीज़ एक गुलाम और अली का क़त्ल होगा इसपर इब्ने मुलजिम ने कहा बकिया चीज़ तो ठीक है लेकिन अली का क़त्ल करना इतना आसान नहीं है और वह भी कुफे में फिर उसने कहा के तुम अली का क़त्ल क्यों चाहते हो तो उसने कहा के जंगे नेहार्वान में मेरा बाप और भाई का क़त्ल हुआ था मैं उनका बदला चाहती हूँ जब इब्ने मुलजिम पूरा मुतमइन हो गया तो अपने आने का मकसद कतामा पर ज़ाहिर करदिया और कतामा से इस काम में मदद मांगी तो कतामा ने अपने दो पुराने आशिक एक का नाम **वीर्दान बिन मुलादित** और दुसरे का नाम **शाबान बिन अश्जय** था यह तीनो मिलकर मस्जिदे कुफा की मस्जिद में जाकर सो गए।

हज़रत अली ने १८ वा रोज़ा अपनी बेटी कुलसुम के घर में खोला और उस रात वहीं कयाम किया जब आपकी बेटी ने शाम का खाना लगाया दस्तरख्वान पर तमाम नेमतें थी आपने अपनी बेटी से फ़रमाया के मैं दस्तरख्वान पर एक से ज्यादा चीज़ें पसंद नहीं करता आपने नमक और रोटी के आलावा सारी गिजाए हटादी, बेटी के सवाल पर आपने फ़रमाया के मैं चाहता हूँ के मैं जब दुनिया से उठू तो खाली पेट उठू इसलिए आपकी बेटी कुलसुम ने दस्तरख्वान से सारी गिजाए हटादी आज की शब हज़रत अली बहुत ज्यादा उलझन में नज़र आ रहे थे, बार बार सेहन में आकर आसमान को देखते हैं और फरमाते हैं खुदा की कसम इसी शब का मुझसे वादा किया गया था, तो आपकी बेटी कुलसुम ने फ़रमाया के आप आजकी सेहर मस्जिद में ना जाए और अपनी जगह भाई हसन को भेज दें आपने कहा के अगर कज़ा आई है तो कहीं भी उससे बचा नहीं जा सकता और आपने अपनी कमर का पट्टा कसा और कहा मौत से घबराना नहीं चाहिए और अगर मौत सामने खाड़ी है तो उसके पास जाने की जल्दी ना करो उसको ही अपने पास आने दो आप जब मस्जिद में नमाज़ पढ़ाने खड़े हुए तो यह तीनो जालिम आपके पीछे एक साथ खड़े होगए और जैसे ही हज़रत अली सजदे में गए तो शाबान ने तलवार का वार करदिया लेकिन यह

वार मस्जिद के मिम्बर से टकरा गया जब तक अली उठ पाते इब्ने मुलजिम ने दौड़ कर ज़हर बुझी तलवार से आप पर वार करदिया अली ने कहा के रब की कसम मैं कामियाब हो गया मस्जिद में तलातुम मच गया लोगों ने इब्ने मुलजिम को मस्जिद के बाहर गिरफ्तार करलिया और अली के सामने पेश किया गया आपने अपने बेटे हसन से फ़रमाया के अगर मैं वार के सबब मर जाता हूँ तो इब्ने मुलजिम को एक ही जर्बत लगाना और अगर मैं बच गया तो सजा मैं दूंगा मौके का फायदा उठाकर वीर्दान भागकर अपने एक अज़ीज़ के घर पहुंच गया और जब इसने अपने अज़ीज़ को बताया के मैं अली के क़त्ल में शरीक हूँ तो इसके अज़ीज़ ने उसको उसी वक्त क़त्ल करदिया धीरे-धीरे **२१ रमजान की शब नमूदार हुई और आधी शब के बाद हज़रत अली दुनिया से रुकसत हो गए,** आपके बेटों ने आपको गुसुल दिया और वसीयत के मुताबिक पीछे के दरवाजे से जनाज़े को लेकर कुफे से हिरा की तरफ गाए कुफे और हिरा के दरमियान सफ़ेद पहाड़ी जो अब नजफ़ में आती है वहाँ पे नमाज़े जनाज़ा बेटे हसन ने पढाई और जब वहां की मिटटी हटा कर देखि तो एक कबर तैयार थी उस कबर से दो हाथ नमूदार हुए और एक आवाज़ आई लाओ मेरे वसी को मेरे हवाले करदो दफ़न करने के बाद कबर का निशान मिटाकर आपके बेटे कुफे वापस आ गए।

२१ रमजान की सुबह जब लोगों को खबर लगी के हज़रत अली शहीद हो गए और दफ़न भी हो गए तो कुफे में कोहराम मच गया इब्ने मुलजिम को क़त्ल करदिया गया और इसकी लाश को जलादिया गया यही हुजूम कतिमा के घर के तरफ बढ़ा और इसके भी घर के अन्दर टुकड़े करके जलादिया गया घर को लूट लिया और आग के हवाले करदिया इधर शाबान भागकर दमिश्क पहुंच गया और माविया से मिलकर कहा मैं अली का कातिल हूँ तो माविया ने मुन्गीरा को हुकुम दिया के इसको क़त्ल करदो यह एक राज़ है हज़रत अली कहाँ दफ़न हुए उनके चारो बेटे हनफिया और अब्बास के आलावा कोई नहीं जानता। हज़रत अली के १० बेटे और १८ बेटियां थी लेकिन इनकी नसल हुसैन, हनफिया और हसन से चली बाकी सभी कर्बला में शहीद हो गए। आपकी ज़ौजाओं में जनाबे **फ़ात्मा** से हज़रत हसन, हुसैन, जैनब और कुलसुम हुए।

जनाबे उम्मुल बनीन से हज़रत अब्बास जफ़र अब्दुल्लाह इसके आलावा बेटियों में फ़ात्मा उम्मुल हसीन, रब्बाब और हौरा थी।

जनाबे आसिया से उमर, उस्मान, अब्दुल्लाह, मुहम्मद, जैनब, आएशा, बनीम, आसमा, उम्मुल फ़ात्मा, बाकी और ६ बेटियां थी जो कनीजो से हुई।

इस तरहा पैगम्बरी के बाद दौरे खिलाफत शुरू हुआ और तमाम मसले-मसाइलो को ख़त्म करने के बाद हज़रत अली इस काएनात के आखरी खलीफा हुए और अपनी पूरी ज़िन्दगी आपने कौले खुदा और कौले रसूल (सल-लल्ला-हु-अलैहे-वसल्लम) को अमल में लाने के लिए अपनी तमाम ज़िन्दगी ख़त्म करदी।

इस तरहा खिलाफत का इख्तेताम हो गया।